वेदसार

लेखक एवं प्रकाशक

धर्मपाल कपूर

बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.

कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 9356301618

संस्करण : 2020
प्रतियाँ : 1000

धर्मपाल कपूर
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 9356301618

टंकण एवं संयोजन : अभिनव इंटरप्राइजिज, मो. 9468340497, 8168490221
मुद्रक :

दो शब्द

वेद को पढ़ना पढ़ाना चाहिए। वेद को सुनना सुनाना चाहिए।
वेद के अनुकूल ही हे आर्यो! आचरण अपना बनाना चाहिए।।

–पंडित प्रकाशचंद्र 'कविरत्न'

वस्तुतः वेद वह गंगोत्री है, जहाँ से भारतीय संस्कृति की गंगा प्रवाहित होती है। भारतीय संस्कृति का शुद्ध रूप वेद में ही मिलता है। वेद विविध बहुमूल्य विचार रूप रत्नों के रत्नाकर (सागर) हैं। जैसे नदियों में गंगा, वृक्षों में पीपल, दही में मक्खन, पशुओं में गाय सर्वश्रेष्ठ है। उसी प्रकार वेदों को भी संसार के विभिन्न विद्वानों एवं गिन्नीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने संसार के पुस्तकालय में प्राचीनतम एवं श्रेष्ठतम ग्रंथ माना है। अतः महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है–

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। जो इस पर खरा उतरे ले लो। शेष सब छोड़ दो। व्यर्थ के व्यामोह (अज्ञान) में न पड़ें।

वस्तुतः महाभारत काल से पूर्व सारे संसार में वैदिक धर्म था। एक ही धर्म ग्रंथ–वेद, एक ही गुरु मंत्र गायत्री मंत्र, एक ही उपास्य देव ओ३म् (ईश्वर का प्रमुख नाम) एवं एक ही अभिवादन–नमस्ते प्रचलित था। प्रस्तुत पुस्तक को अग्रलिखित चार भागों में बाँटा गया है–

1. वेदसार – प्रस्तुत भाग में वेदों के महत्त्व, वेदों का संक्षिप्त परिचय इनके ऋषि छंद एवं स्वर का अभिप्राय परमात्मा, आत्मा एवं प्रकृति का प्रतिपादन संक्षित रूप से प्रस्तुत किया गया है।

2. वेदमंत्र – चारों वेदों के केवल 25 अत्यंत महत्त्वपूर्ण मंत्र जोकि साधारणतः विभिन्न शुभ अवसरों पर बोले जाते हैं अर्थसहित प्रस्तुत किये गये हैं।

3. वेदसूक्तियाँ – इसमें चारों वेदों की 125 अत्यंत महत्त्वपूर्ण सूक्तियाँ जो कि साधारणतः शुभ अवसरों पर बोली जाती हैं, को भी अर्थसहित प्रस्तुत किया गया है।

4. वेदप्रश्नोत्तरी – इसमें वेदों के विषय में 25 अत्यंत महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तरी जोकि विभिन्न आर्य समाजों के विद्वानों द्वारा प्रवचनों में प्रायः बोले जाते हैं, का भी संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है। वस्तुतः यह वेद

प्रश्नोत्तरी विशेषतः बच्चों के लिए लिखी गई है ताकि वे इसका आसानी से अध्ययन कर सकें और उन्हें भारतीय संस्कृति का ज्ञान प्राप्त हो सके और वे संस्कारी बने ।

वस्तुतः वेदसार वेदों का स्वाध्याय करने के लिये एक स्पष्ट सरल एवं सरस पुस्तक है । जिसका अध्ययन करके साधारण हिन्दी भाषा का ज्ञाता भी वेदों के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकता है । प्रस्तुत पुस्तक मैंने चारों वेदों एवं अनेक भाष्यों के अध्ययन के उपरान्त कड़ी मेहनत एवं सच्ची लगन से लिखी है और इसमें जैसे सागर में गागर भर दिया है ताकि आज के अत्यंत व्यस्त युग में साधारण व्यक्ति भी इसका अध्ययन बड़ी आसानी से कर सकें, क्योंकि आज साधारण व्यक्ति के पास वेद जैसे विशालकाय ग्रंथों को पढ़ने का समय नहीं है ।

प्रस्तुत पुस्तक के लिखने में मुझे सर्वश्री लालचंद चौहान, रोशनलाल अग्रवाल, नरेश बंसल, जय किशन जी आदि ने सहयोग प्रदान किया है । इसके अतिरिक्त मैं उन सभी लेखकों एवं कृतिकर्ताओं का भी अत्यन्त धन्यवादी हूँ जिनकी कृतियों में से संदर्भ उद्धृत किये गये हैं । वस्तुतः बोलना सरल है परन्तु लिखना अत्यधिक कठिन । जैसे कि संस्कृत में एक उक्ति है—

शतं वद एकं मा लिख

सौ बार कहो परन्तु एक बार भी मत लिखो । क्योंकि लेखन में यदि कोई त्रुटि रह गई तो वह तुरन्त पकड़ी जाती है और लेखक की पोल खुल जाती है । मैंने प्रस्तुत पुस्तक के लिखने में पूर्ण सावधानी बरती है । परन्तु संसार के प्रत्येक व्यक्ति की भाँति मैं भी अल्पज्ञ एवं अपूर्ण हूँ । अतः यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो मैं पाठकों से क्षमा चाहूँगा ।

धर्म पाल कपूर

(धर्मपाल कपूर)
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 9356301618

दिनांक : 15-9-2020

निवेदन

श्री धर्मपाल कपूर जी द्वारा लिखित पुस्तक ''वेदसार'' का संपादन करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। यह सर्वविदित है कि श्री धर्मपाल कपूर जी ने 68 पुस्तकें लिखी हैं जिनमें से 19 पुस्तकें छपवा कर निःशुल्क वितरण की हैं। आर्य समाज के प्रचार में इनकी भूमिका सराहनीय है। वेदसार पुस्तक में चारों वेदों के प्रमुख-प्रमुख मन्त्रों को चुना है जो आध्यात्मिक दृष्टि से बड़े ही महत्त्वपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक हैं। इसके अतिरिक्त प्रमाण के रूप दर्शन, उपनिषद् एवं अन्य धार्मिक ग्रंथों के उदाहरण भी दिये हैं। इस पुस्तक में ज्ञानवर्धन 25 वेदमंत्रों एवं125 वेद सूक्तियों को अर्थसहित सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है। प्रश्नोत्तरी के माध्यम से बहुत महत्त्वपूर्ण विषयों पर संक्षिप्त में प्रकाश डाला है। सरल भाषा है जिसे साधारण मनुष्य व बच्चे भी बड़ी सुगमता से समझ सकते हैं।

प्रायः बहुत से लोगों में वेद के प्रति बड़ी भ्राँतियाँ हैं इसका मुख्य कारण क्या है? महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेदों का शुद्ध भाष्य करने का निश्चय किया और महर्षि ने वेदों को समझने के लिए सर्वप्रथम ''ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका'' लिखी थी, ताकि लोग वेदों के महत्त्व को समझ सकें। अक्सर विद्वानों द्वारा पुस्तक में प्रथम भूमिका दी जाती है। भूमिका में पुस्तक में दिये गये विषयों के सम्बन्ध में संक्षिप्त में जानकारी दी जाती है ताकि पुस्तक के विषयों का ज्ञान पढ़ने वाले को हो जाये।

श्री धर्मपाल कपूर जी द्वारा 'वेदसार' पुस्तक में वेदों के नाम उनके ऋषि, किस वेद में कितने मंत्र हैं, किस वेद का ज्ञान ईश्वर ने किस ऋषि को दिया? यह सब जानकारी दी है, ताकि वेदों के सम्बन्ध में लोगों को ज्ञान हो। वेद ईश्वरकृत हैं, वेद सत्य विद्याओं की पुस्तक है, वेद में असत्य कुछ भी नहीं है। वेद ईश्वर की वाणी है। किसी कवि के द्वारा वेद विषय में कही गई पंक्तियाँ अग्रलिखित हैं–

वेद मेरा (ईश्वर) भेद है, मैं वेदों के माय।
जो कुछ मेरे हृदय में, वह वेदों में भी नाय।।

उक्त का कवि का कहने का भाव है कि पूर्णतया ईश्वर ज्ञान को कोई नहीं जान सकता अर्थात् ईश्वर का ज्ञान अनन्त है, जिसको पूर्ण रूप से ऋषि महर्षि भी नहीं जान पाये हैं। वेद स्वतः प्रमाण है, वेद को अन्य किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।

यह पुस्तक बहुत ज्ञानवर्धक है, लेखक ने इसे बहुत परिश्रम से लिखा है। विद्या दान सबसे बड़ा दान है और श्री धर्मपाल कपूर जी पुस्तकों के माध्यम से विद्या का दान करते आ रहे हैं। ईश्वर इन्हें लम्बी आयु, निरोगी काया प्रदान करे ताकि वह इस कार्य में अपना योगदान देते रहें। श्री धर्मपाल कपूर जी को हम पुस्तक बाँटते देखें, ईश्वर से मैं सदा उनकी दीर्घायु की प्रार्थना करता हूँ।

दिनांक 6.10.2020

लालचन्द चौहान
से.नि. राज्य विकास अधिकारी
591/12, पंचकूला
मो. 8557057170
मो. 7508201740

विशेष सूचना

1. स्वाध्याय, मनन और आत्मसात् ।
2. पाठकगण पुस्तक पढ़ने के पश्चात् किसी भी स्वाध्यायशील मित्र को इसे देने की कृपा करें ।
3. कोई भी जिज्ञासु अपनी इच्छानुसार इसकी प्रतियाँ फोटोस्टेट करवा कर स्वाध्यायशील मित्रों में प्रचार-प्रसार के लिये बाँट सकता है ।
4. पुस्तक केवल प्रचारार्थ लिखी गई है और पुस्तक का मूल्य स्वाध्याय करके चुकाया जा सकता है ।
5. सर्वाधिकार लेखकाधीन ।

धर्मपाल कपूर
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 9356301618

विषयसूची

		पृष्ठ
1.	वेदसार	1
2.	वेदमंत्र	29
3.	वेदसूक्तियाँ	41
4.	वेदप्रश्नोत्तरी	52

1. वेदसार

सारी सत्य विद्याओं का इक वेद ही भण्डार है ।
पूर्ण नियमों का ईश्वर ने दिया इसमें सार है ।
पूर्णतया परमात्मा का पूर्ण इसमें ज्ञान है ।
हो परिवर्तन न इसमें ऐसा नित्य विज्ञान है ।
वेद प्रभु के आदेशों का सुन्दर मंगल गान है ।
वेद ही ईश्वर की वाणी वेद विमल विज्ञान है ।
सुख शांति को पाने का केवल यही विधान है ।
वेद के ही ज्ञान से संसार का कल्याण है ।

वेद शब्द की व्युत्पत्ति विद् धातु से हुई है जिसका अर्थ है ज्ञान । । इसके अतिरिक्त शक्ति, विचार और लाभ भी वेद शब्द के अर्थ हैं । यह ज्ञान साधन से नहीं, प्रार्थना से ही प्रार्थी के हृदय में प्रभु के कृपा प्रसाद से अवतरित होता है । ईश्वरीय ज्ञान होने से वेद सम्पूर्ण ज्ञान का कोष है । वैदिक शब्दों का स्वरूप अर्थ जो आदि में वही था जो प्रलय से पूर्व था और जब-जब सृष्टि हुई तब था और जब-जब सृष्टि होगी, रहेगा । वेद चार हैं–ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद । जैसे कि अथर्ववेद में लिखा है–

ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह ।
उच्छिष्टज्जज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रितः ।। –11.7.24

सृष्टि के आदि में परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य एवं अंगिरा ऋषियों की आत्मा में एक-एक वेद का प्रकाश किया ।

प्रस्तुत मंत्र में चारों वेद के नाम एक साथ आये हैं । वे सिद्ध करते हैं कि चारों वेद का ज्ञान एक साथ प्राप्त हुआ है न कि क्रमिक व्यवस्था से । इससे यह ज्ञात होता है कि वेदों का विभाजन महर्षि वेदव्यास ने नहीं किया था अपितु प्रभु द्वारा ही किया गया था । महर्षि वेद व्यास ने केवल

चारों वेदों की शिक्षा अपने चारों शिष्यों पैल, वैशम्पायन, जैमिनी एवं सुमन्तु को दी थी । इसी प्रकार शतपथ ब्राह्मण में लिखा है–

अग्ने ऋग्वेदो वायुयजुर्वेदः सूर्यात्काम वेदः । –99.51.03

सृष्टि के आदि में प्रभु ने अग्नि, वायु, आदित्य एवं अंगिरा की आत्मा में एक-एक वेद का प्रकाश किया ।

चातुर्वर्ण्यं त्रयो लोकाश् चत्वारश्चाश्रमाः पृथक् ।
भूतं भव्यं भविष्यं च, सर्वं वेदात् प्रसिद्धयति ।।

–मनुस्मृति 12.97

चारों वर्ण, तीन लोक, चारों आश्रम, भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों काल का सभी ज्ञान वेद से प्राप्त होता है ।

वेद ही प्रभु की कल्याणकारी वाणी है, यह वेद के अनेक अन्तर्साक्ष्य से भी प्रकट है । यह परम पवित्र वेदज्ञान सृष्टि सर्ग के आरम्भ में–ऋक्, यजु, साम और अथर्व संहिताओं के रूप में मुक्ति से लौटे हुए पवित्रतम आत्माओं–अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा ऋषियों में प्रकाशित हुआ । अतः महर्षि दयानंद भी लिखते हैं–

जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर है उससे ही ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद– ये चारों वेद उत्पन्न हुए हैं ।

-ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका (वेदोत्पत्तिविषयः)

इसी प्रकार पं० भगवद्दत लिखते हैं–

वेद तो सदा से चले आये हैं वस्तुतः पुराणों में भी इसके विपरीत नहीं कहा गया । वहां भी लिखा है कि वेद आरम्भ से ही चतुष्पाद था अर्थात् एक वेद की चार ही संहिताएं थी ।

–वैदिक वाङ्मय का इतिहास (प्रथम भाग पृ० 96)

वेद की भाषा परमात्मा की भाषा है क्योंकि संसार में जितने भी धार्मिक ग्रंथ हैं उनके सृजन के समय से पूर्व भाषा का निर्माण हुआ ।

ऐसा ही जर्मन के विद्वान् मैक्समूलर ने भी लिखा है :

विश्व के इतिहास में यदि किसी ग्रंथ को प्राचीनतम कहा जा सकता है तो वह वेद है जिसमें मानव मस्तिष्क का सर्वोपरि विकास देखा जा सकता है ।

1. वेदों का महत्त्व – महाभारत काल के पूर्व वेदों का वास्तविक अर्थ ऋषि मुनियों द्वारा प्रचलित था । इस काल के बाद इनका ह्रास होने लगा । वेद के भाष्य करने वाले अनेक विद्वान् जैसे सायणाचार्य, महिधर, रावण, उव्वट, महर्षि दयानंद, वेदानंद तीर्थ, सातवलेकर, विद्यानंद ''विदेह'', डॉ० सत्यप्रकाश आदि हुए । परन्तु इन वेदों के विद्वानों में महिर्ष दयानंद सर्वप्रथम विद्वान् थे, जिन्होंने प्रथमबार वेदों का हिंदी में अनुवाद किया और इसी प्रकार डॉ० सत्यप्रकाश की सर्वप्रथम भारतीय थे जिन्होंने प्रथमवार चारों वेदों का अनुवाद अंग्रेज़ी भाषा में किया ।

महर्षि दयानंद से पूर्व किसी ने भी तो वेदों को जन-जन की वस्तु बनाने का लक्ष्य निर्धारित नहीं किया । महर्षि दयानंद ने ''ब्रह्मा से लेकर जैमिनि तक'' शब्दों का प्रयोग किया है । परन्तु वैदिक वाङ्मय के इतिहास में कहीं एक पंक्ति भी ऐसी नहीं मिलती जिससे प्रतीत हो कि ऋषियों की इस लम्बी शृंखला में किसी एक ऋषि ने भी वेदों को विश्वख्याति तक पहुँचाने का प्रयास किया हो । महर्षि दयानंद से पूर्व वेद या तो स्थूलकर्मकाण्ड का विषय बने रहे या अर्थहीन पाठ तक सीमित रहे । महर्षि दयानंद से पूर्व सभी वैदिक विद्वानों का प्रयास वेदों को सरल से सरलतर बनाने की अपेक्षा कठिन से कठिनतर बनाने की ओर रहा । वेद के अध्ययन के लिये ऐसी शर्तें रखी गई थी कि ''न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी'' की लोकोक्ति चरितार्थ होती चली गई । आज भी यही बात लागू होती है । इसका परिणाम यह हुआ कि वेद की जय का उद्घोष करने वाले व्यक्ति भी वेदों को छूने से घबराते हैं ।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है और सृष्टि के आदि में वैदिक संस्कृत में ही वेदज्ञान का प्रकाश हुआ । वेद और इसकी भाषा अपौरुषेय है । इसका ज्ञान जिस भाषा में है वह भाषा मानव निर्मित नहीं है । वह तो प्रकृति की

भाँति नैसर्गिक है। जैसे स्वामी विद्यानंद सरस्वती लिखते हैं–

वेद ज्ञान जिस भाषा के द्वारा दिया गया है उस भाषा की उत्पत्ति संसार की किसी भाषा से नहीं हुई। न ही वह किन्हीं दूसरी भाषाओं का अपभ्रंश है। दूसरी भाषाओं से अपभ्रंश के रूप में नवीन भाषाएँ बन सकती हैं– बनी भी हैं, परन्तु वैदिक भाषा इसका अपवाद है।

–भूमिका भास्कर (भाग-1 पृष्ठ 143)

अथर्ववेद का वचन है –

देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति। – 10.8.32

अर्थात् परमपिता परमात्मा देव के इस काव्य को देखो जो न कभी मरता है न जीर्ण होता है।

वेद की विशेषता यह है कि इसके एक-एक मंत्र और एक-एक शब्द के अनेक अर्थ हैं। सूर्य के अनेक नाम वेद में हैं। जैसे–

1. सूर्य – आगे ले जाने वाला, 2. रवि – आदरणीय, 3. भानु–चमक देने वाला, 4. मित्र – दोस्त, 5. सविता – सब को जीवन देने वाला, 6. खग–जगाने वाला, 7. हिरण्यगर्भ – शक्ति का भण्डार, 8. पूषन – पालने वाला आदि। परन्तु प्रसंगानुसार जो नाम जहाँ उपयुक्त लगता है उसका वही अर्थ भी लगता है।

काव्य को सम्मान और उससे ब्रह्मानंद सरोवर प्राप्त करने के लिए अपेक्षित बुद्धि प्रत्येक व्यक्ति के पास नहीं होती। सृष्टि एवं वेद के रूप में उपलब्ध प्रभुकाव्य को परखना प्रत्येक व्यक्ति का काम नहीं है। परन्तु जिस प्रकार साहित्य के पारखी कवि एक-एक शब्द को सुनकर झूम उठते हैं, उसी प्रकार प्रभुकाव्य की गहराई में जाकर उसके गंभीर एवं चमत्कारपूर्ण अर्थों को जानने वाला भी आनंदविभोर हो उठता है।

वेद का प्रत्येक अक्षर सभिप्रायी और सहैतुक होता है अर्थात् उसका कुछ अभिप्राय एवं उसके प्रयोग में कुछ हेतु निहित होता है। वेद

मंत्र में कोई भी ऐसा शब्द नहीं है, जो अनावश्यक एवं निरर्थक हो उसमें छंदपूर्ति, पुनरुक्ति प्रत्येक कल्पवृक्ष तथा उसका प्रत्येक वाक्य कामधेनु के समान सभी के लिए उनकी वैदिक चेतना के अनुसार अर्थ को प्रकाशित कर देता है ।

वेद की शिक्षायें किसी भी देश विशेष अथवा वर्ग विशेष के लिए नहीं है । अपितु, देशों, सभी समाजों और सभी वर्गों के लिये समान हैं । वेद की शिक्षायें सार्वभौम हैं । अतः चारों वेदों में कहीं भी किसी विशेष देश, समाज अथवा वर्ग का नामोल्लेख भी नहीं मिलता है । वेद का अन्य धर्मग्रन्थों से तुलनात्मक अध्ययन करने से प्रतीत होता है कि जो इन ग्रंथों में सत्यम् शिवम् सुंदरम् है वह सब वेदों का ही है और जो इसके भिन्न हैं वह झूठ व भ्रांति है । इसी कारण विभिन्न ग्रंथों में वेदों की महत्ता पर प्रकाश डाला गया है । जैसे—

1. वेदोऽखिलो धर्ममूलम् —मनुस्मृति 2.6

वेद धर्म के मूल हैं । वही धर्म के विषय में स्वतः प्रमाण है ।

2. न वेद शास्त्रदन्यतु किञ्चिच्छास्त्र हि विद्यते ।
निस्सृतं सर्वशास्त्रं तु वेदशास्त्रत्सनातनात् ।। —याज्ञवल्क्यस्मृति

वेद शास्त्र से बढ़कर कोई शास्त्र नहीं है । अन्य सब सत्य शास्त्र सनातन नित्य वेद से ही निकले हैं ।

3. निजशकत्यभिव्यक्तेः स्वतः प्रामाण्यम् —सांख्य दर्शन 5.51

4. न ह्येषु प्रत्य श्रमस्त्य नृषेरतपसो वा पायेवर्य वित्सु तु खलु वेदितृषु भूयो विद्यः प्रशस्यो भवतीत्युक्तं पुरस्तात् । —निरुक्त 12.13

वेद का ज्ञान तपस्या द्वारा ऋतम्भरा प्रज्ञा को प्राप्त करके ऋषित्व स्थिति में पहुँचकर ही प्राप्त किया जा सकता है । जिन में ऋतम्भरा प्रज्ञा नहीं है जो व्यक्तियों में तपस्वी नहीं हैं । गुढार्थ में प्रवेश करने की जिन व्यक्तियों में योग्यता नहीं है । वे वेदार्थ को समझने में असमर्थ ही रहते हैं । अतः तैत्तिरीय ब्राह्मण में लिखा है—

अनन्ता वै वेदाः तैत्तिरीय ब्राह्मण –3.10.11.4

वेद अनन्त हैं ।

प्रभु की स्वभाविक शक्ति से प्रकट होने के कारण वेद स्वतः प्रमाण हैं ।

5. ओंकार वेद निरमाए । –श्रीगुरुग्रंथसाहिब

ईश्वर ने वेद बनाए ।

–(राग राम कली मुहल्ला 1 ओंकार शब्द 1)

इस प्रकार सारे धर्म ग्रंथ एक स्वर से वेदों की नित्यता एवं स्वतः प्रमाणता का प्रतिपादन करते हैं । इसी प्रकार सुप्रसिद्ध पारसी विद्वान् फर्दून दादानचान ने अपनी पुस्तक **"Philosophy of Zoroastrianism and comparative study of Religions"** में लिखा है–

> **The Veda is a book of knowledge and wisdom, comprising the book of Nature, the book of religion, the book of prayers, the book of morals and so on. The word Veda means wit, wisdom, knowledge and truly the Veda is condensed with wisdom and knowledge.** —P. 100

वेद ज्ञान की पुस्तक है, जिसमें प्रकृति, धर्म, प्रार्थना, सदाचार आदि विषयक बातें सम्मिलित हैं । वेद का अर्थ ज्ञान है । वास्तव में वेद में सारे ज्ञान-विज्ञान का तत्त्व भरा हुआ है ।

2. वेद ही हमारे जीवन को उच्च कर सकते हैं । योरूप के सारे दर्शन और विद्वान् इसके सामने तुच्छ हैं । इसलिये वेदों की ओर जाओ । –एमर्सन

3. वैदिक धर्म अत्यंत प्राचीन धर्म है और संसार के धर्मों की श्रेणी में प्रथम भाग और स्थान उसी का है । मैं चाहता हूँ कि उसके मनोहर, मनोरंजक उपदेशों और विचारों का संक्षेप तैयार करूं, ताकि उसे सुगमता से पढ़ और समझ सकें । –टॉलस्टाय

4. वेद समस्त ज्ञान का भण्डार है–सम्पूर्ण विद्याओं का आदि मूल है ।

–स्वामी विद्यानन्द सरस्वती (भूमिका भास्कर, पृ० 65)

अमेरिका में Hymns from the Rigveda और Secrets of Vedas नामक पुस्तकों के लेखकों ने वेद को मानव की सवर्तोमुखी उन्नति करने वाले ग्रंथ कहा है। अन्ततः व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय उत्थान केवल वेदानुकूल आचरण से ही हो सकता है।

वेद की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए डॉ० श्री योगेश्वर प्रसाद सिंह लिखते हैं–

वेदमहिमा

वेद मूल है सब धर्मों का,अखिल विश्व की थाती,
इसके पृष्ठों पर संस्कृति की गरिमा है लहराती।
पहला महाकाव्य संस्कृत का, धरती पर प्राचीन,
शब्द-शब्द में भाव भरे हैं, अनुपम और नवीन,
ज्ञान-किरण अक्षर-अक्षर में, मोहक लौ फैलाती।।1।।

सृष्टि-चक्र के साथ वेद का है अटूट संबंध,
काट रहा युग-युग से भवरोगों का दारुण बन्ध,
वेद मंत्र पढ़ बार-बार रसना है नहीं अघाती।।2।।

जिसने इसको जान लिया, फिर उसको क्या हे शेष?
वेद बनाता है इस धरती का पावन परिवेश,
भारत क्या यह सारी दुनियाँ इसको शीश झुकाती।।3।।

अपौरुषेय रही जो रचना, गरिम से भरपूर,
मानवता के पथ की बाधाओं को करती दूर,
जहाँ विद्वता ज्ञान-दक्षता सुख से आदर पाती।।4।।

वेद वृक्ष की शाखाएं हैं ब्राह्मण औ आरण्यक,
उपनिषदें जिसके मंत्रों की व्याख्या करती सम्यक्,
ज्ञान-दीप की जलती रहती जहाँ हमेशा बाती।।5।।

अमर ज्योति फैलाने वाला है यह वेद महान्,
ऋषि-मुनि, देव और भूपों का शिक्षाप्रद आख्यान,
नारी का सम्मान जहाँ ऋषिकाएँ खूब बढ़ाती ।।6।।

वन्दनीय यह वेद ज्ञेय है जन-जन का यह धन है
मुझको लगता, सारी वसुधा का ही यह दर्पण है,
मौन आज विज्ञान, वेद की महिमा कही न जाती ।।7।।

2. वेदों के महत्त्व के कारण :–

एकेश्वरवाद – वेद में एकेश्वरवाद का प्रतिपादन हुआ है। जैसे–

ओम् इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गुरुत्मान् ।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः ।।

–ऋग्वेद 1.164.46, अथर्ववेद 9.10.28

परमात्मा एक है परन्तु ज्ञानी लोग उसके गुण, कर्म और स्वभाव के कारण एवं अपने-अपने अनुभवों के अनुसार उसे विभिन्न नामों से पुकारते हैं। जैसे--ऐश्वर्यशाली होने से वह इन्द्र है, मृत्यु से त्राता होने से वह मित्र है, पाप निवारक होने से वह वरुण है, प्रकाशक होने से वह अग्नि है। अतः वेदमंत्रों में अनेकों नामों से पुकारा जाता हुआ भी वह एक है। मंत्रों में दिव्य सुपर्ण (शोभन पतन वाला) या गुरुत्मान (गुरु आत्मा) अग्नि, यम, नियन्ता परमात्मा की स्तुति की गई है। गुरुदत्त विद्यार्थी लिखते हैं–

> **Vedas, the sacred books of the primitive aryans, are the puras record of the highest form of monotheism possible to concience.** —Works of Pandit Gurudutt Vidyarthi P. 43

वेद प्राचीन आर्यों के पवित्र ग्रंथ हैं। ये एकेश्वरवाद के शुद्धतम लेख की सर्वोच्च शाखाएँ हैं जोकि हमारे अन्तकरण के अनुसार हैं। जैसे ऋग्वेद में भी लिखा है–

विश्वस्यमिषतो वशी —ऋग्वेद 10.190.2

सारा संसार उस एक ही परमपिता के वश में है ।

बाइबल में भी लिखा है—

सृष्टि के आदि में प्रभु का शब्द था । सारे विश्व की एक ही भाषा थी, एक ही वाणी का सर्वत्र व्यवहार था ।

इसी प्रकार कुरान में भी लिखा है—

पहले तो सब लोगों का एक ही मजहब था ।

2. ज्ञान, कर्म और उपासना का समन्वय—

वेदों में कर्म, ज्ञान और उपासना (भक्ति) का सुन्दर समन्वय हुआ है क्योंकि केवल ज्ञान, केवल कर्म और केवल भक्ति से मुक्ति नहीं मिल सकती ।

(1) अपितु इन तीनों के समुच्चय से ही प्रभु की अनुभूति हो सकती है। यही वैदिक धर्म की शिक्षा है। अतः श्रद्धा एवं मेधा के सुन्दर समन्वय की शिक्षा वैदिक धर्म ही सिखाता है ।

(2) **मध्य मार्ग एवं समन्वय** — वेदों में मध्यमार्ग का प्रतिपादन और उनके समन्वयात्मक उपदेश हैं । संसार में प्रायः देखा जाता है कि व्यक्ति मध्य मार्ग का अवलम्बन न करके किसी न किसी पराकाष्ठा पर तुल जाते हैं । जैसे—कुछ व्यक्ति ऐसे हैं जो केवल व्यक्तिगत उन्नति से ही संतुष्ट रहते हैं और सामाजिक उन्नति की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं देते । दूसरे कई ऐसे व्यक्ति हैं जो पर्याप्त रूप से अपनी शारीरिक, मानसिक, आत्मिक शक्तियों को विकसित करने का प्रयत्न न करके केवल दूसरों की उन्नति के विचार से ही तत्पर रहते हैं । वास्तव में, देखा जाये तो ये दोनों ही आवश्यक हैं । परन्तु वेदों की शिक्षा भोग व समन्वय की है । जैसे—

ओ३म् ईशा वास्यामिदँ सर्व यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ।। —यजुर्वेद 40.1

जो कुछ इस ब्रह्माण्ड में दिखाई दे रहा है । प्रभु उसके कण-कण और क्षण-क्षण में विद्यमान हैं । अतः जो भी किसी के पास है वह त्यागमय भाव से भोगे क्योंकि यह धन किसी का भी नहीं है ।

वेद की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए पंडित श्रीराम शर्मा लिखते हैं–

वेद परम पिता परमेश्वर की अमर वाणी है । वेदों के द्वारा हमको सांसारिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार का श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त होता है । वेदों का स्वाध्याय पापों से दूर रखकर हमारे जीवन में आशा एवं उल्लास की वृद्धि करता है । वेद-ज्ञान जीवन को शांत एवं पवित्र बनाकर कुपथ से सुपथ की ओर ले जाता है । यह व्याकुल एवं भ्रमित मन को सचेत करके उचित मार्ग दर्शन भी देता है ।

अतः वेद माँ है, जो मानव को देवता बना देता है । यह धर्म का मूल एवं जीने की कला है । वेद श्रीराम की मर्यादा एवं श्रीकृष्ण की गीता है । यह महर्षि पतंजलि का योग एवं महर्षि दयानन्द का परम धर्म है । वेद, विप्रों का भूषण, ज्ञानियों का प्रयाग और ज्ञान-कर्म-उपासना का संगम है ।

3. तर्क एवं विज्ञान – वेदों में धर्म और विज्ञान का मूल है । इस बात का महर्षि दयानंद जी ने अपने वेदभाष्यों में दिखाया है ।

श्री पावगी अपनी पुस्तक Vedic India में लिखते हैं ।

The Veda is the fountain head of knowledge, the prime source of inspiration, may be the grand repository of Pirthy passages of Divine Wisdom and even eternal truths.

वेद सम्पूर्ण ज्ञान के आदि स्रोत, ईश्वरीय ज्ञान का प्रधान आधार, इतना ही नहीं अपितु दिव्य बुद्धि और नित्य सत्यमय वाक्यों के महान् भण्डार हैं ।

4. सार्वभौम निष्पक्ष शिक्षा – वेदों की शिक्षा में सार्वभौमिकता, ओजस्विता, नित्यता, सरलता व सत्यता है । जैसे–

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । —यजु. 36.18

इस संसार के प्रत्येक प्राणी को मित्र की दृष्टि से देखें ।

वस्तुतः अवैज्ञानिक और दूषित शिक्षा प्रणाली के कारण ही वेद कठिन प्रतीत होते हैं । पहले तो वैदिक भाषा ही संसार में प्रचलित सारी भाषाओं में सबसे अधिक सुबोध्य व सरलतम भाषा है । वेद-अवतरण से युगों बाद वैयाकरण का निर्माण हुआ है । वेद व्याकरण से पहले हैं । पहले देववाणी में वेदवाणी का अध्ययन हुआ और संस्कृत व्याकरण व वेद व्याकरण युगों के उपरांत संकलित किये गये ।

5. कर्त्तव्य का प्रतिपादन – वेदों में मानव के सभी प्रकार के कर्त्तव्य, व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय कर्त्तव्यों का विशद विवेचन किया गया है । जैसे–

अंग्रेज़ी विद्वान् W.D. Brown ने अपनी पुस्तक Superiority of the Vedic Religion में लिखा है ।

> **It (Vedic religion) recognises but one God. It is a thoroughly scientific religion where religion and science meet hand in hand. Here theology is based upon science and philosophy.**

वैदिक धर्म केवल एक ही प्रभुप्रतिपादन करता है । यह एक पूर्णतः वैज्ञानिक धर्म है, जहाँ धर्म एवं विज्ञान हाथ से हाथ मिलाकर चलते हैं । यह धार्मिक सिद्धान्त विज्ञान एवं तत्त्वज्ञान और दर्शन पर आश्रित है । अतः महर्षि दयानंद कृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के अनुशीलन के उपरांत मैक्समूलर ने लिखा था–

> **मेरा यह निश्चित मत है कि संसार के मनुष्य मात्र के स्वाध्याय के लिए वेद के अतिरिक्त अन्य कोई आवश्यक ग्रंथ नहीं है । मेरा विचार है कि आत्मज्ञान की प्राप्ति की इच्छा रखने वाले तथा अपने पूर्वजों, इतिहास और मस्तिष्क की उत्पत्ति के लिए सचेत, प्रत्येक व्यक्ति के लिए वेद का स्वाध्याय नितांत आवश्यक है ।**

3. वेदसार – चारों वेदों में 20,416 मंत्र, 1,53,826 शब्द, 8,64,000 अक्षर एवं 24,000 छन्द हैं। इनका संक्षिप्त विवरण अग्रलिखित है–

1. ऋग्वेद – इसमें 10 मंडल, 1028 सूक्त, 10,589 मंत्र, 209 देवता और 354 ऋषि हैं। इसके ऋषि का नाम अग्नि है। इसमें विज्ञान और पदार्थों के गुण और धर्मों का वर्णन है। यह देवों की स्तुतियों से भरपूर है। इसके अतिरिक्त सृष्टिरहस्य, नक्षत्र, अर्थशास्त्र, पशुपालन, परिवार का सुख, मृत्यु को जीतना, एक ईश्वरवाद, आशावाद आदि विद्याओं का उल्लेख है। इसमें 74 बार धर्म शब्द का प्रयोग हुआ। इसके 8 मण्डलों को छोड़कर अन्य मण्डलों का आरम्भ अग्नि से हुआ है। अग्नि सूक्त में 45 प्रकार की अग्नियों का उल्लेख है। इसलिये प्रोफेसर मैक्समूलर ने सत्य ही लिखा है–

> **The texts of the Vedas have been handed down to us with such accuracy that there is hardly a various reading in the proper sense of the word or even an uncertain accent in the words of the Rigveda.**

वेद संहिताएँ हमें ऐसी शुद्धरीति से प्राप्त हुई हैं कि इनमें कहीं भी पाठभेद नहीं मिला। सम्पूर्ण ऋग्वेद में एक भी अक्षर का भेद नहीं मिला।

2. यजुर्वेद – इसमें 1975 मंत्र और 40 अध्याय हैं। प्रथम 39 अध्यायों में यज्ञ का वर्णन है। ऋषि का नाम वायु है। यज्ञ में समिधा चयन, मार्जन, भूमि, सर्वमेधयज्ञ, शुद्धि, अन्त्येष्टि संस्कार, प्रार्थना मंत्र आते हैं। यज्ञों के अतिरिक्त अन्य विद्यायें जैसे सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, भूगोल, खगोल, अग्नि, जल, वायु, विद्या, अंकगणित, बीजगणित, औषधि, वैधक, ज्योतिष, युद्धविद्या आदि भी हैं। परन्तु 40वें अध्याय में केवल आध्यात्मिक विद्या का वर्णन है। इसमें 700 मंत्र ऋग्वेद के हैं।

3. सामवेद – इसमें 27 अध्याय, 87 साम और 1875 मंत्र हैं।

इसके तीन भाग हैं—पूर्वार्चिक के 640 मंत्र, महानाम्नी के 10 मंत्र और उत्तरार्चिक के 1225 मंत्र हैं। इसके ऋषि का नाम आदित्य है। साम का अर्थ है – समन्वय। यह भारत के समन्वयवाद का प्रतीक है। समन्वय में संगीत, माधुर्य, आनंद है। उपासना, जगत्, जीव और जगत् नियंता का, इसमें विश्वसंगीत भी है। इससे ज्ञान व आनंद की प्रगति होती है। इसके मंत्र अध्वर्यु (यज्ञ का एक ऋत्विक) पढ़कर यज्ञकर्म कराता है। ये एक साथ मिलकर ही पढ़े जाते हैं। सामवेद के 1875 मंत्रों में से 1590 मंत्र ऋग्वेद के हैं जोकि सामवेद के अतिरिक्त यजुर्वेद एवं अथर्ववेद में भी मिलते हैं। यहाँ तक कि ऋग्वेद में 9 मण्डल के 4 मंत्र सामवेद में तीन-तीन बार विभिन्न स्थानों में पाये जाते हैं। जैसे—

ऋग्वेद मंत्र	**सामवेद मंत्र**
9-61-13	487. 762. 1335
9-66-19	627, 1464, 1518
9-98-7	552, 1329, 1681
9-101-13	553, 774, 136

सामवेद के मंत्रों को नाना स्वर भेद से एक हज़ार प्रकार से गाया जा सकता है। वस्तुतः इस वेद के प्रत्येक मंत्र में प्रभु प्रेम की विद्युत् तरंग प्रवाहित हो रही है; प्रत्येक सामगान में परमात्मा के आनंदरूपी वीणा की झंकार झंकृत दृष्टिगोचर हो रही है, जिस को सहृदय रसिक भक्त ही अनुभव कर सकते हैं न कि मोहमाया में फंसे हुये लोग।

सामवेदश्च वेदानाम् —अनुशासन पर्व 14.317

वेदों में मैं सामवेद हूँ।

इसी प्रकार श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं—

वेदानां सामवेदोऽस्मि। —10.22

वेदों में मैं सामवेद हूँ।

अब प्रश्न उठता हॅ कि सामवेद सबसे छोटा वेद है फिर भी वेदों में इसको सर्वोच्च स्थान क्यों दिया है । इसका कारण यह है कि अन्य वेदों में केवल मंत्र हैं । सामवेद में मंत्र तो हैं परन्तु साथ ही उन्हीं मंत्रों को गानपरक गाया गया है । सामवेद छोटा होने पर भी सबका सार रूप है । जैसे चतुर माली उत्तमोत्तम पुष्पों को लेकर एक सुन्दर गुलदस्ता बना देता है, उसी प्रकार सारे वेदों के चुनिंदा अंश इसमें एकत्रित किये गये हैं । आदिम कालीन यज्ञों में भगवान् की जो सर्वश्रेष्ठ भावपूर्ण मधुर एवं संगीतमय स्तुतियां की गई हैं । उन्हीं को चुनकर प्रस्तुत वेद में प्रस्तुत किया गया है । उपासना-वेद होने के कारण सामवेद तापत्रय से संतप्त व्यक्तियों को अगाध शांति प्रदान करता है। आधि-व्याधि एवं वासनाओं से विक्षुब्ध व्यक्ति इसके मंत्रोच्चारण करते हुए भक्तिवश आनंदसागर में डूब जाता है । इसके मंत्र अमूल्य रत्नों की खान है । उनमें कोई जितना गहरा उतरेगा जितना परिश्रम करेगा, उतने ही ज्ञान रूपी अमूल्य रत्नों को पायेगा ।

4. अथर्ववेद – इसमें 20 कांड, 731 सूक्त और 5977 मंत्र हैं इसका 20वां कांड और 1200 मंत्र भी ऋग्वेद के हैं । इसके ऋषि का नाम अंगिरा है । एक ही मंत्र के विषय में अनेक पदार्थों का विज्ञान है । यह वेद गृह कांड है। इसमें जन्म, विवाह, संस्कार, मृत्यु, औषधि, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, अध्यात्मविद्या, कृषि, गणित, पृथिवी सूक्त, चिकित्सा, अंत्येष्टि महायज्ञ का वर्णन है । इसके 19 कांड में 27 नक्षत्रों का वर्णन है । पहले मंत्र का ऋषि अथर्व है । इसे ब्रह्म के नाम से भी पुकार जाता है । क्योंकि यह ब्रह्मवादियों को मोक्ष देता है । अतः इसको ब्रह्मवेद और छन्दोवेद भी कहा जाता है ।

इस प्रकार ऋग्वेद की 21, यजुर्वेद की 101, सामवेद की 1000 अथर्ववेद की 9 शाखाएं हैं । इस प्रकार चारों वेदों की 1131 शाखायें हैं । परन्तु इनमें से अधिकतर अप्राप्य हैं ।

अतः वेद प्रभु की दिव्य वाणी है । वेद से बढ़कर संसार में कोई ग्रंथ नहीं है । क्योंकि ये स्वतः प्रमाण हैं । संसार के पुस्तकालय में वेद

प्राचीनतम, सरलतम और सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ हैं। अतः विद्वानों ने ऋग्वेद को ज्ञान, यजुर्वेद को कर्म, सामवेद को उपासना और अथर्ववेद को अध्यात्म का विवेचन करने वाला माना है। परन्तु स्वयं वेदों में स्थान-स्थान पर यही घोषणा की गई है कि चारों वेद और उनका ज्ञान एक ही है। वस्तुतः वेदों का वास्तविक आदर्श आत्मवत् सर्वभूतेषु अर्थात् सब प्राणियों को अपनी आत्मा के समान समझो या वसुधैव कुटुम्बकम् अर्थात् सारा संसार एक परिवार है। इनमें तत्कालीन धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, स्थिति का जो कुछ विवरण ज्ञान होता है, उसमें हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं, कि उस काल का चारित्रिक एवं नैतिक मापदण्ड बहुत ऊँचा था और लोगों में त्याग भावना उच्चकोटि की पाई जाती थी। महर्षि दयानंद लिखते हैं—

याज्ञवल्क्य महाविद्वान् जो महर्षि हुए हैं, वह अपनी पण्डिता मैत्रेयी स्त्री को उपदेश करते हैं कि हे मैत्रेयी! जो आकाशादि से भी बड़ा सर्वव्यापक परमेश्वर है, उससे ही ऋक्, यजु, साम और अथर्व ये चारों वेद उत्पन्न हुए हैं। जैसे मनुष्य के शरीर से श्वास बाहर को आके फिर भीतर को आती है इसी प्रकार सृष्टि के आदि में ईश्वर ने वेदों को उत्पन्न करके संसार में प्रकाश करता है और प्रलय में संसार में वेद नहीं रहते, परन्तु उसके ज्ञान के भीतर वे सदा बने रहते हैं, बीजाङ्कुरवत। जैसे बीज में अंकुर प्रथम ही रहता है, वही वृक्ष रूप होके फिर भी बीज के भीतर रहता है, इसी प्रकार से वेद भी ईश्वर के ज्ञान में सब दिन बने रहते हैं, उनका नाश कभी नहीं होता क्योंकि वह ईश्वर की विद्या है इससे इसको नित्य ही जानना। —ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका (अथवेदोत्पत्तिविषयः)

इसी प्रकार स्वामी विवेकानंद ने भी लिखा है—

वेदों के द्वारा ही हम अपने धर्म का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। वेदों के अतिरिक्त सब ग्रंथ बदलने वाले हैं।

अतः इन सारे प्रमाणों के आधार पर यदि हम महर्षि दयानंद के

इस कथन पर विचार करें कि ज्ञान, कर्म, उपासना एवं विज्ञान ये चार वेदों के मुख्य प्रतिपाद्य विषय हैं और इनमें प्रभु ही प्रधान विषय है तो हम यह देखते हैं कि उन्होंने वेदों व वैदिक वाङ्मय की सदियों से टूटी शृंखला को जोड़कर ऋषियों द्वारा गूंथी गई, इस वैदिक माला के सौन्दर्य को पुनः लौटा दिया। इससे वेदों के संबंध में सारी भ्रांतधारणाओं का निवारण होकर उनका सुस्पष्ट पुनः मुखरित हो गया।

वस्तुतः ऋषि दयानंद ने आजीवन किसी की नौकरी न की। वह ऋषि ईश्वर का प्यारा था। उसने श्रद्धा से भरपूर हृदय के साथ अपने प्यारे प्रभु की अमर वेदवाणी का सही अर्थ करके मानव का उपकार किया। उसके वेदभाष्य की यह विशेषता है कि उसने परमात्मा के दिशानिर्देश में यह कार्य सम्पन्न किया। इस कार्य में उसका मार्ग दर्शक केवल परमात्मा ही था न कि कोई व्यक्ति।

4. वेद मंत्रों के साथ प्रयुक्त ऋषि, छंद और स्वर का अभिप्राय–

1. ऋषि – वेद मंत्रों के साथ प्रयुक्त ऋषि शब्द के संबंध में प्राचीन वैदिक साहित्य के दृष्टिकोण को जानना महत्त्वपूर्ण व प्रामाणिक होगा। वस्तुतः ऋषि वे होते हैं जो सर्वव्यापक ईश्वर को सर्वत्र अनुभव करते हुए ज्ञान से तृप्त, रागरहित, आनंदित एवं परमशांत रहते हैं। अतः यास्कमुनि निरुक्त में लिखते हैं –

ऋषियोमंत्र दृष्टारः निरुक्त 2.1

अर्थात् मंत्रों का दर्शन करने वाला व्यक्ति ही ऋषि होता है।

इसी प्रकार महर्षि दयानंद ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में लिखा है–

ईश्वर आदि सृष्टि में जिस समय वेदों का प्रकाश कर चुका, तभी से प्राचीन ऋषि लोग वेद मंत्रों के अर्थविचार करने लगे, फिर उनमें से जिस-जिस शब्द का अर्थ जिस जिस ऋषि ने प्रकाशित किया, उस उस का नाम उसी मंत्र के साथ स्मरण के लिये लिखा गया है। इसी कारण से उनका ऋषि नाम भी हुआ है।

2. देवता – प्रत्येक वेद मंत्र के साथ ऋषि शब्द के साथ देवता का नाम भी लिखा होता है । इसके विषय में सर्वानुक्रमणीकार लिखते हैं–

या तेनोच्यते सा देवता

जो विषय किसी मंत्र द्वारा प्रतिपादित किया जाता है । वह उस मंत्र का देवता होता है । मंत्र में जिस नाम से किसी की स्तुति होती है या जो मंत्र में आत्मपरिचय प्रस्तुत कर रहा होता है । वह उस मंत्र का देवता होता है । जैसे–

विश्वानि देव सवितः (ऋग्वेद 5.82.5 और यजु० 30.3) में सविता से दुरित के दूरीकरण एवं भद्रप्राप्ति की याचना की गई है । अतः सविता इस मंत्र का देवता है । अतः देवता शब्द मंत्र के विषय का प्रकाशक है न कि उपासना का ।

3. छंद एवं स्वर – प्रत्येक वेदमंत्र के साथ छंद व स्वर भी लिखे होते हैं ।

महर्षि दयानंद के मतानुसार वेदमंत्रों के साथ छंद इसलिये लिखे होते हैं कि उनसे व्यक्तियों को छंदों का ज्ञान भी यथावत् होता रहे । कौन सा छंद किस स्वर में गाया जाना चाहिए यह ज्ञान होना जरूरी है । वस्तुतः छंदों का ज्ञान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । सभी वैदिक मंत्र छंदों में हैं और जब तक छंदों का ज्ञान नहीं होता । तब तक उनको शुद्ध रूप से पढ़ा नहीं जा सकता और न यथोचित फल उपलब्ध हो सकता है । चारों वेदों के मंत्र छंदबद्ध हैं परन्तु केवल यजुर्वेद में कहीं कहीं गद्य में भी मंत्र मिलते हैं । वेदों में 4 अक्षर से लेकर 104 अक्षर तक मंत्र मिलते हैं । वेदों में अनेक छंद हैं । जैसे गायत्री, पंक्ति, बहती, जगती आदि । ऋग्वेद का सर्वप्रथम मंत्र गायत्री छंद में है । विश्वानि देवः इस मंत्र का छंदपूर्ण गायत्री है । इसलिए इस मंत्र में सविता कहने के उदित का ग्रहण होगा और इससे हमें यह समझना होगा कि उदित सविता शरीर के सब दुरितों को दूर करके शरीर में कल्याणकारी तत्त्वों को प्रविष्ट करेगा ।

वस्तुतः छंद वेद के चरण हैं । जिस प्रकार चरणरहित व्यक्ति चलने में असमर्थ होता है, उसी प्रकार छंदरहित वेद की गति भी नहीं होती । वेदों में अग्रलिखित मुख्य 26 छंद हैं–

1. ऋग्वेद के 13 छंद – 1. गायत्री, 2. उष्णिक, 3. अनुष्टुप, 4. बृहती, 5. पंक्ति, 6. त्रिष्टुप, 7. जगती, 8. अतिजगती, 9. शक्वरी, 10. अतिशक्वरी, 11. सृष्टि, 12. अत्यष्टि, 13. धृति ।

2. यजुर्वेद के 8 छंद – 1. अतिधृति, 2. कृति, 3. प्रकृति, 4. आकृति, 5. विकृति, 6. संकृति, 7. अभिकृति, 8. उत्कृति ।

3. अथर्ववेद के 5 छंद – 1. उक्ता, 2. अत्युक्ता, 3. मध्या, 4. प्रतिष्ठा, 5. सुप्रतिष्ठा ।

इनके अतिरिक्त सामवेद और अथर्ववेद में ऋग्वेद एवं यजुर्वेद में प्रयुक्त छंदों का प्रयोग मिलता है, जिनके 231 भेद-प्रभेद हैं–

मुख्यतः स्वर तीन होते हैं–

उदात्त, अनुदात्त एवं स्वरित । ऊँचे स्वर में उच्चारण के कारण उदात्त, मन्द स्वर में उच्चारण होने से अनुदात्त एवं दोनों में समावेश से उच्चरित होने के कारण स्वरित कहा गया है ।

वेदमंत्र स्मरण रखने और उनमें एक भी अक्षर या मात्रा का भी लोप न हो सके, इसके लिए उसे 13 प्रकार से याद किया जाता है–इन्हें संहितापाठ, पदपाठ, क्रमपाठ, जटापाठ, पुष्पमाला पाठ, क्रममालापाठ, शिखापाठ, रेखापाठ, दण्डपाठ, रथपाठ, ध्वजपाठ, धनपाठ एंव त्रिपद घनपाठ के नाम से पुकारा जाता है । पाठों के इन नियमों को विकृति ''वल्ली नामक'' ग्रंथ में विस्तार से दिया गया है । इन प्रयत्नों की सराहना करते हुये मैक्समूलर ने अपने ग्रंथ Origin of Religion में पृष्ठ 131 पर लिखा है–

The texts of the Vedas have been handed down to us with such accuracy that there is handly a various reading in

the proper sense of the word or even an uncertain aspect in the whole of Rigveda.

वस्तुतः बादामों में छिलकों का जितना उपयोग है, उतना ही उपयोग वेदों में ऋषि, देवता, छंद व स्वर का है। सेवन बादाम की गिरी की जाती है छिलके नहीं। गिरी का सेवन कराने के लिये गिरी के छिलकों को पृथक् करना पड़ता है। वेद की व्याप्ति में महत्त्व वेद मंत्रों में निहित शिक्षाओं का ही है। उद्देश्य संसार को वेदों की गिरी का सेवन कराना है।

5. प्रभुप्रतिपादन :– महर्षि दयानंद ने अपनी सारी मान्यताओं का आधार वेदों को स्वीकार किया है और उन्हीं मान्यताओं को वैदिक साहित्य के प्रमाणों द्वारा "सत्यार्थ प्रकाश" "ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका" आदि ग्रंथों में पुष्ट किया और इन सारे विचारों का सार उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज के 10 नियमों में किया गया है। अतः महर्षि दयानंद का उद्घोष था–

वेदों का मुख्य विषय ईश्वर का प्रतिपादन ही है।

इसी कारण उन्होंने ईश्वर के विभिन्न गुणों का उल्लेख आर्य समाज के दूसरे नियम में किया है जिनका आधार वेद ही है। अतः ईश्वर के विभिन्न मुख्य गुणों का संक्षिप्त वर्णन अधोलिखित पंक्तियों में किया जाता है।

(1) सत्‌चित्‌आनंद – प्रकृति केवल सत्य है, आत्मा सत्य एवं चेतनस्वरूप भी है परन्तु परमात्मा सत् चित् आनंदस्वरूप है। इस प्रकार प्रकृति के पास केवल एक गुण, आत्मा के पास दो गुण और परमात्मा के पास तीन गुण हैं। आनंद केवल परमात्मा के पास है। जैसे–

परिप्रजातः क्रत्वा बभूव, भवो देवानां पिता पुत्रः सन्।

–ऋग्वेद 1.69.1

वह सत्स्वरूप विद्वानों, सूर्यादि का उत्पादक पालक व पवित्रकर्त्ता है।

(2) निराकार : वेदों में कहीं पर भी परमात्मा के साकार रूप का प्रतिपादन नहीं किया गया है। अतः परमात्मा का निराकार रूप ही वेदों में वर्णित है, क्योंकि वह सत्, रज, तम गुणों से रहित है–इस कारण उसकी कोई भी मूर्ति नहीं हो सकती है। जैसे –

न तस्य प्रतिमाऽअस्ति यस्य नाम महद्यशः। –यजुर्वेद 32.3

उस परमात्मा की कोई प्रतिमा नहीं है। जिसका नाम एवं यश महान् है।

(3) सर्वशक्तिमान् – इसका भाव यह है कि परमात्मा सृष्टि सृजन, पालन, प्रलय व कर्मफल देने में सर्वशक्तिमान है। जैसे – महर्षि दयानंद लिखते हैं–

जो अपने कार्य करने में किसी अन्य की सहायता की इच्छा नहीं करता, अपने ही सामर्थ्य से अपने सब कार्य पूरे करता है। इससे उस ईश्वर का नाम सर्वशक्तिमान है।

इस प्रकार ऋग्वेद में लिखा है –

चकृषे भूमिं प्रतिमानमोजसोऽपः स्वः परिभूरेण्या दिवम्।

–ऋग्वेद 1.52.12

सर्वव्यापक परमात्मा अपनी शक्ति से भूमि की रचना करता है।

(4) न्यायकारी – परमात्मा न्यायकारी है क्योंकि उसका पक्षपात रहित धर्म करने का स्वभाव है। जैसे–

शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नोभवत्वर्यमा। –यजुर्वेद 36.9

वह परमात्मा न्यायकारी है।

(5) दयालु – न्यायकारी के साथ परमात्मा दयालु भी है क्योंकि वह न्यायकारी है और इसी कारण वह दयालु है।

(6) अजन्मा – परमात्मा अजन्मा है उसका कभी भी जन्म नहीं होता। क्योंकि वह जन्म के बिना ही सृष्टि की उत्पत्ति, पालन एवं प्रलय करता है। जैसे–

अजो न क्षां दाधार पृथिवीं तस्तम्न द्यां मंत्रेभिः सत्यैः ।

—ऋग्वेद 1.67.3

वह अजन्मा परमात्मा अपने अबाधित विचारों से सारी पृथिवी आदि को धारण करता है ।

(7) अनंत — परमात्मा अनंत है । इसी कारण उसे उपनिषदों में ''नेति-नेति'' अर्थात् यह भी नहीं, यह भी नहीं कहकर पुकारा गया । जैसे—

न यस्य देवा देवता न मर्ता आपश्चन शवसो अंतमापुः

—ऋग्वेद 1.100.15

उसके बल का अंत कोई भी प्राप्त नहीं कर सकता अर्थात् वह अनंत है ।

(8) निर्विकार — वह विकार रहित है अतः वह पूर्णतः ऋषियों का प्रेरणा स्रोत रहा है । अतः उस शुद्धस्वरूप का सर्वत्र दार्शनिक जगत् में प्रतिपादन हुआ है ।

(9) अनादि — निर्विकार होने के कारण ही प्रभु अनादि है अर्थात् उसका कोई आदि व अंत नहीं है । जैसे—

जनुषा सनादसि —सामवेद 5.2.1

परमात्मा अनादि है ।

(10) अनुपम — उसको इस संसार का पिता अनेक मंत्रों में कहा है क्योंकि उसके समान शक्तिसम्पन्न अन्य कोई नहीं है । अतः तभी वह अनुपम है । जैसे—

न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते

—ऋग्वेद 7.32.23

परमात्मा के समान न कोई जन्मा है और न जन्मेगा ।

(11) सर्वाधार — वह अनुपम इसलिये है क्योंकि वह सारे ब्रह्माण्ड का आधार है । जैसे —

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।

—ऋग्वेद 10.121.1

वह परमात्मा पृथ्वी और द्युलोक दोनों का आश्रय है वही सबका आधार है ।

(12) सर्वज्ञ – वेदों में उसे सर्वज्ञ भी कहा गया है क्योंकि उसका ज्ञान अनंत है । अतः कुछ विद्वान् उसे त्रिकालदर्शी भी कहते हैं ।

6. आत्माप्रतिपादन –

1. शरीर से भिन्न चेतन स्वरूप– वेदों में आत्मा को शरीर से भिन्न स्वरूप में वर्णित किया गया है । जैसे–

नूचित्सहोजा अमृतो नि तुन्दते हातो यद्दूतो अभवद्धिवस्वतः
वि साधिष्ठोभिः पृथिवी रजो मम् आ दवेताता हविषा विवासति ।

—ऋग्वेद 1.58.1

यह आत्मा चेतनस्वरूप, कर्मफल का भोक्ता एवं मन व शरीर आदि का धारण करने वाला है ।

जब कोई व्यक्ति कहता है कि यह मेरा शरीर है, यह मेरा मकान है, ये मेरे स्वजन हैं । इसका भाव यह है कि शरीर व आत्मा अलग अलग हैं । आत्मा का भाव है मैं । जैसे–

अहं इन्द्रो न शरीरं ।

मैं आत्मा हूँ न कि शरीर ।

(2) अनादि – वेदों में आत्मा को अजर, अमर व अनादि नाम से पुकारा गया है । शरीर के नाश होने पर आत्मा का नाश नहीं होता । आत्मा व शरीर के संयोग का नाम जन्म है और आत्मा व शरीर के वियोग का नाम मृत्यु है । जैसे– एच.जी. नरहरि ने अपनी पुस्तक ''आत्मा'' में लिखा है ।

> **It is clear that the Vedic poets believed in survival of immortal principle of man even after the distruction of this** mortal body.

यह स्पष्ट है कि वैदिक कवि क्षणभंगुर मानव शरीर के नष्ट हो जाने के पश्चात् भी आत्मा के शाश्वत सिद्धांत के अस्तित्व को स्वीकार करते थे ।

(3) अल्पज्ञ – आत्मा एक देशीय एवं अल्पज्ञ है परन्तु परमात्मा सर्वज्ञ है । आत्मा व परमात्मा दो विभिन्न सत्ताएं हैं जैसे–

अयं स जज्ञे ध्रुव आ निषत्तोऽमर्त्यस्तन्वा३ वर्धमानः ।

–ऋग्वेद 6.9.4

इस शरीर में दो चेतन नित्य पदार्थ हैं । आत्मा व परमात्मा उन दोनों में एक अल्पज्ञ आत्मा है और परमात्मा सर्वज्ञ है ।

(4) स्वतन्त्र कर्मकर्ता एवं भोक्ता – प्रत्येक व्यक्ति कर्म करने में तो पूर्णतः स्वतंत्र है, परन्तु कर्मफल भोगने में परतन्त्र है क्योंकि कर्मफल उसे प्रभु की न्यायव्यवस्था के अनुसार मिलता है । यहां तक कि आत्मा को ऋग्वेद में होता अर्थात् कर्मभोक्ता कहा गया है ।

7. प्रकृति प्रतिपादन – जगत्-निर्माण के अधोलिखित तीन कारण हैं ।

(1) निमित्त कारण (Efficient Cause) इसका भाव यह है कि जो जगत् को बनाने वाला है । परमात्मा जगत् निर्माता होने के कारण ही इसका निमित्त कारण है । जिस प्रकार कुम्हार घड़े को बनाने वाला होने के कारण घड़े का निमित्त कारण है । वस्तुतः परमात्मा जगत्-निर्माण के बाद उससे अलग नहीं होता परन्तु व्यक्ति हो जाता है ।

(2) साधारण कारण (Resultant Cause) इसका भाव यह है कि जो बनाने में साधन एवं प्रयोजन हो और जिसके लिये जगत् का निर्माण किया गया हो । इसी प्रकार कुम्हार ने ग्राहकों के लिए घड़ा बनाया है । अतः ये आत्माएं घड़ा, दिशा, आकाश, प्रकाश आदि जगत् के साधारण कारण हैं ।

(3) उपादान कारण (Material Cause) इसका भाव यह है कि जिसका ग्रहण करके ही उत्पन्न होवे और कुछ बनाया जाये और जिसके बिना कुछ न बने। जैसे परमात्मा ने प्रकृति से ही जगत् को बनाया है और इसी प्रकार कुम्हार भी मिट्टी से घड़ा बनाता है। अतः प्रकृति जगत् का उपादान कारण है। परन्तु परमात्मा उपादान कारण नहीं है क्योंकि वह अनादि है।

अतः उपर्युक्त जगत्निर्माण के तीन कारणों के कारण ही वेदों का त्रैतवाद यथार्थवादी है। इसी सिद्धान्त के अनुसार परमात्मा, आत्मा और प्रकृति तीन अलग-अलग सत्ताएं हैं। अतः ऋग्वेद में लिखा है—

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।

तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्यो अभिचाकशीति।

—ऋग्वेद 1.164.20, मुण्डकोपनिषद् 3.1.1

ऋग्वेद एवं मुण्डकोपनिषद् में आलंकारिक भाषा में लिखा है कि एक ही वृक्ष पर परमात्मा एवं आत्मा रूपी दो पक्षी बैठे हैं। जिनमें से एक उस वृक्ष के फलों को खाता है अर्थात् प्रकृति के भोगों को भोगता है और दूसरा परमात्मा प्रकृति के फलों को न खाता हुआ साक्षी के रूप से देख रहा है। अतः इसी प्रकार परमात्मा निमित्त कारण आत्मा के कर्म, साधारण कारण और प्रकृति को उपादान कारण के रूप में प्रतिपादित किया गया है। इस प्रकार श्वेताश्वेतरोपनिषद् में लिखा है—

अजामेकां लेहितशुक्लकृष्णां बह्वीः प्रजाःसृजमानां सरूपाः।

अजोह्योको जुषमाणोऽनुशेते जहात्येनां भुक्तभोगामजोऽन्यः।।

—4.5

प्रकृति, आत्मा एवं परमात्मा तीनो अज हैं। अर्थात् इनका कभी भी जन्म नहीं होता और ये तीनों जगत् के कारण हैं। इनका कोई कारण नहीं अनादि प्रकृति का भोग, अनादि आत्मा करता हुआ फंसता है और

उसमें परमात्मा न फंसता है और न उसका भोग करता है । अतः वेदों में परमात्मा, आत्मा और प्रकृति का जो निरूपण किया गया है उसे ही त्रैतवाद के सिद्धान्त से पुकारा जाता है ।

6. चरित्र एवं नीति– चरित्र एवं नीति के संबंध में वेदों का आदर्श बहुत ऊंचा है । यह ठीक है कि उस समय भी संत व महात्माओं के साथ राक्षस, तस्कर, चोर आदि कुकर्म करने वाले व्यक्ति पाये जाते थे । परन्तु वेदों में सर्वत्र उनकी निन्दा की गई है और समाज का शत्रु मानकर उनके नाश की प्रार्थना की गई है । वैदिक काल में सभी धार्मिक व्यक्तियों का दृढ़ विश्वास था कि देवगण सदैव आस-पास रहते हैं । इसलिए यदि कोई कुकर्म करेगा तो उसका दण्ड उनको अवश्य भुगतना पड़ेगा। इस भावना के परिणामस्वरूप दया, धर्म के नियमों के अनुकूल ही रहता था । समाज में सुख व शांति का वातावरण बना रहता था। समाज के व्यक्तियों में समानता एवं प्रेम का भाव पाया जाता था और एक दूसरे की हर प्रकार सहायता करना अपना कर्त्तव्य समझते थे । जैसे ऋग्वेद में लिखा है–

ओम मोघमन्न विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य ।
नायमगं पुष्पतिनो सखायं, केवलाघो भवति केवलादी ।।

–ऋग्वेद 10.117.6

जिसका मन उदार नहीं है । उसका भोजन करना व्यर्थ है । उसका भोजन उसकी मृत्यु के समान है । जो न तो देवगण को परोपकारार्थ देता है और न मित्रों को देता है और स्वयं ही भोजन करता है वह पाप खाता है। इससे प्रतीत होता है कि वस्तुतः वेदों में तत्कालीन धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक स्थितियों का जो कुछ चारित्रिक एवं नैतिक मापदण्ड था, वह बहुत ऊँचा था और लोगों में त्याग की भावना भी उच्चकोटि की पाई जाती थी । महर्षि पराशर के जीवन की एक घटना उल्लेखनीय है–

एक बार महर्षि पराशर जी अपने आश्रम में बैठे हुए थे और पास

ही उनके शिष्य भी बैठे हुए थे । उनके एक शिष्य मैत्रेय ने पूछा—

भगवन् ! इस संसार में नंगा कौन है ?

सवाल बड़ा अद्‌भुत था । हमें भी यह अद्‌भुत लग सकता है क्योंकि शिष्य का अपने गुरु से इस प्रकार का प्रश्न पूछना अद्‌भुत लगता है । सभी जानते हैं कि जिस व्यक्ति ने वस्त्र नहीं डाले होते हैं उसे ही नंगा कहा जाता है । परन्तु मैत्रेय के प्रश्न को सुनकर महर्षि पराशर जी भी गंभीर हो गये और कुछ क्षणों के लिये चिन्तन की गहराई में उतर गये । कुछ देर के पश्चात् आँखें खोली और कहा—

संसार में त्रयीविद्या के नाम से चार वेद प्रसिद्ध हैं । हे मैत्रेय ! जो इन वेदों का स्वाध्याय नहीं करता है वह इस संसार में नंगा है ।

इसी प्रकार डॉ० सत्यव्रत सिद्धांलकार लिखते हैं—

ऋषि दयानंद के हाथों में जो वेदार्थ की कुंजी आ गई थी । उसने बुद्धि के दरवाजे खोल दिये और वेदों के आधार पर ही ऋषि ने दो घोषणाएं कीं । एक घोषणा यह थी कि सृष्टि का रचियता परमेश्वर है और दूसरी घोषणा यह थी कि सृष्टि के रचयिता अनेक नहीं एक ही है । यह सत्य मनुष्य द्वारा परीक्षणों से पाया नहीं जा सकता, भगवान् द्वारा ही दिया जा सकता है । —चतुर्वेद गंगा लहरी पृ० 420

अन्ततः इतना ही कहना काफी होगा कि वेद ही मानवता के आदि धार्मिक ग्रंथ हैं । जैसे नदियों में गंगा, वृक्षों में पीपल, दही में मक्खन और पशुओं में गाय सर्वश्रेष्ठ है उसी प्रकार संसार के विभिन्न विद्वानों एवं गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकाड्‌र्स ने भी इन्हें संसार के प्राचीनतम एवं श्रेष्ठतम ग्रंथ घोषित किया है । संसार में वेदमंत्रों से बढ़कर कोई वस्तु पावन नहीं और यज्ञ से बढ़कर कोई पावन दृश्य नहीं । वेद की ऋचाएं सार्वभौमिक, सार्वकालिक एवं सुन्दरत्तम हैं । इनकी वाणी ईश्वरीय, दिव्य एवं कल्याणकारी है । अतः यजुर्वेद में लिखा है—

वेदों के पढ़ने और सुनने का अधिकार मनुष्यमात्र को है। —26.2

जागो, उठो, समझो, समझाओ, वेदसंदेश जन-जन तक पहुँचाओ। क्योंकि संसार को आज वैदिक धर्म की परमावश्यकता है। एक हिन्दी कवि के शब्दों में—

पूर्ण वह परमात्मा सत्यज्ञान का भण्डार है।
पूर्ण वेदों में किया सत्यधर्म का विस्तार है।।
जैसे दो और दो के मिलने से बनता चार है।
इस तरह वैदिक धर्म का सत्य ही आधार है।।

इसी प्रकार वेद प्रकाश शास्त्री ने भी अपनी अग्रलिखित कविता ''पढ़ो वेद का ज्ञान'' में वेदों का सारामृत देकर गागर में सागर भर दिया है। ज़रा देखिए—

पढ़ो वेद का ज्ञान

पढ़ कर वेद का ज्ञान, मिटा लो अज्ञान – अरे नादान।

अग्नि, वायु थे ऋषि महान्, आदित्य हुए विद्वान्।
मिला उन्हें प्रथम वेद का ज्ञान, पढ़ लो वेद का ज्ञान—अरे नादान।।1।।

आदि ग्रंथ है वेद कहाता, ब्रह्मज्ञान और मुक्ति का दाता।
अन्य पंथ का मत करो गुमान, पढ़ लो वेद का ज्ञान—अरे नादान।।2।।

ईश्वर है सृष्टि रचता, भोगी जीव कर्म है करता।
प्रकृति है भोग्य निधान, पढ़ लो वेद का ज्ञान—अरे नादान।।3।।

वेदों में कोई इतिहास नहीं है, जादू-टोना औ बकवास नहीं है।
देखो भरा पड़ा है सद्ज्ञान, पढ़ लो वेद का ज्ञान—अरे नादान।।4।।

सायण ने कितना अनर्थ किया, महीधर-उव्वट ने अनुचित अर्थ किया।
दयानन्द ने दिया सही अर्थ का ज्ञान, पढ़ लो वेद का ज्ञान—अरे नादान।।5।।

वेदभाष्य का नवयुग आया, दयानन्द ने है सत्पथ दिखलाया।
आया देखो कैसा स्वर्ग विहान, पढ़ लो वेद का ज्ञान – अरे....।।6।।

समता का यह पाठ पढ़ाता, नहीं भेदभाव में रखता नाता ।
सर्वहित बना एक विधान, पढ़ लो वेद का ज्ञान—अरे नादान । ।7 । ।

दयानन्द का नाद यही है, सत्यज्ञान का स्रोत यही है ।
सद्‌गुण की है यह खान, पढ़ लो वेद का ज्ञान – अरे नादान । ।8 । ।

संस्कारों की है महिमा गाता, है सबके कर्त्तव्य सदा बताता ।
सुख पावो इनकी गरिमा जान, पढ़ लो वेद का ज्ञान – अरे नादान । ।9 । ।

सार चतुर्वेद का है गायत्री, यही कहाती है सावित्री ।
इससे नहीं पावक छन्द महान्, पढ़ लो वेद का ज्ञान – अरे..... । ।10 । ।

प्रभु का नाम गुणों के अनुरूप, वह सत् चित् आनन्दस्वरूप ।
प्रमुख ओम् नाम को जान, पढ़ लो वेद का ज्ञान – अरे नादान । ।11 । ।

परमेश्वर का है रूप निराकार, कभी न लेता वह अवतार ।
घट-घट में उसको व्यापक जान, पढ़ लो वेद का ज्ञान – अरे... । ।12 । ।

पापों से वह बिंधा नहीं है, विकारों से वह भरा नहीं हैं
वेद ने किया यही बखान, पढ़ लो वेद का ज्ञान – अरे नादान । ।13 । ।

2. वेदमंत्र

1. **ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।**
होतारं रत्नधातमम् ।। ऋग्वेद 1.1.1

अग्निमीळे–स्तुति करना, पुरोहितं–प्राचीनत्तम, यज्ञस्य–यश प्रकाशक, ऋत्विजम्–सब ऋतु रचक, होतारं–महादानी, रत्नधातमम्–रत्न निर्माता ।

विश्व विधाता के चरणों में सुन्दर पुष्प चढ़ाऊँ ।
जिसने यह ब्रह्माण्ड संवारा उसकी गाथा गाऊँ ।

मैं उस प्रभु की जो कि संसार के अनादि यज्ञ-प्रकाशक, सब ऋतुरचक, महादानी, रत्ननिर्मात्ता, सब अग्रणीय नेता की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करता हूं । वही मेरा एक मात्र उपास्य देव है ।

2. **ओ३म् इला सरस्वती, मही तिस्नो देवीर्मयोभुव ।**
वर्हिः सीदन्त्व स्मिधः ।। ऋग्वेद 5.5.8

मातृभाषा, मातृसभ्यता एवं संस्कृति, मातृभूमि ये तीन देवियां अथवा माताएं कल्याणकारी हैं । अतः ये तीन माताएं अंतःकरण में न भूलते हुए विद्यमान रहे ।

3. **ओ३म् स्वस्ति पन्थामनुचरेम, सूर्याचन्द्रमसाविव ।**
पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि ।। ऋग्वेद 5.51.15

1. स्वस्ति पन्था–कल्याण मार्ग, 2. अनुचरेम्–अनुसरण करें, 3. साविव–समान, 4. ददता–दानी, 5. अघ्नता–अछूता, अहिंसक, 6. जानता–ज्ञानी, 7. संगमेमहि–संगति करें ।

हम सूर्य एवं चन्द्रमा के समान कल्याण मार्ग का अनुसरण करें । इसके पश्चात् दानी, अहिंसक और ज्ञानी व्यक्तियों की संगति करें ।

4. **ओ३म् विश्वदानीं सुमनसः स्याम पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम्**
तथाकरद्वसुपतिर्वसूनां देवां ओहानोऽवसागमिष्ठः ।।

–ऋग्वेद 6.52.5

1. विश्वदानीं—हम, 2. सुमनसः—प्रसन्नमन, 3. स्याम—रहे, 4. पश्येम—देखते रहें, 5. नु—और, 6. सूर्यमुच्चरन्तम्—उदय होते हुए सूर्य को, 7. पतिर्वसुनां—प्रभु वैसा करे, 8. देवाँ—देवो, 9. ओहानो—प्राप्त करने वाले, 10. गमिष्ठः—रक्षण ।

हम सदा आनन्दित और प्रसन्न मन रहें और उदय होते सूर्य को देखते रहें । ऐश्वर्यों का ऐश्वर्याधिपति देवों को प्राप्त कराने वाला, रक्षण शक्ति के साथ आने वालों में सर्वश्रेष्ठ प्रभु वैसा करें ।

5. **ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् ।**
उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।। —ऋग्वेद 7.59.12

तीनों कालों में एक रस रहने वाले परमात्मा की, जो बलदाता और यशस्वी है हम स्तुति करते हैं । हे प्रभो ! जैसे पका हुआ खरबूजा लता से स्वयं छूट जाता है, वैसे हमें भी मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाओ न कि अमरत्व से । कहने का भाव यह है कि हम भी पके हुए ख़रबूजे की भाँति सारे जीवन में मिठास भरा हुआ जीवन-यापन करें और पके ख़रबूजे की भांति जीवन से मुक्त हो जायें । इस प्रकार मृत्यु के बंधन से मुक्त हो जायेंगे, परन्तु परमात्मा से हमारा संबंध बना रहेगा, इस प्रकार हम मरकर भी अमर रहेंगे ।

6. **ओ३म् उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहिश्वयातुमुत कोकयातुम् ।**
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदे व प्र मृग रक्ष इन्द्र ।।

—ऋग्वेद 7.104.22, अथर्व. 8.4.22

1. उलूकयातुं—उल्लू की चाल, 2. शुशुलूकयातुं—भेड़िये की चाल, 3. जहि—नाश कर (त्याग दे), 4. श्वयातुं—कुत्ते की चाल, 5. उत—और, 6. कोकयातुम्—चिड़े की चाल, 7. सुपर्णयातुम—गरुड़ की चाल, 8. उत—और, 9. गृध्रयातुं—गिद्ध की चाल, 10. दृषदे व—पत्थर समान कठोर साधन से पीस डाल, 11. रक्ष—राक्षस की, 12. इन्द्र—हे आत्मन् ।

छः पशु हैं तेरे अंदर वेद हमें बतलाते हैं ।

उल्लू, कुत्ता, गिद्ध, भेड़िया, कोक, बाज कहलाते हैं ।।

संसार की कोई भी वस्तु निरर्थक और निष्प्रयोजन नहीं है । प्रत्येक वस्तु का अपना महत्व है जिसकी अपेक्षा नहीं की जा सकती । कर्त्ता की कृत्ति एवं रचयिता की रचना की यही सार्थकता है। पशुओं से भी व्यक्ति को उपदेश लेकर अपने जीवन का सुधार करना चाहिए ।

7. **ओ३म् सप्त मर्यादाः कवयस्ततक्षुस्तासामेकामिदभ्यंहुरो गात् ।**
आयोर्ह स्कम्भ उपमस्य नीके पथां विसर्गे धरुणेषु तस्थौ ।

—ऋग्वेद 10.5.6, अथर्व. 5.1.6

विद्वानों ने सात मर्यादाओं का निर्माण किया है। उनमें से जो व्यक्ति एक मर्यादा का भी उल्लंघन करता है वह पापी बन जाता है । वस्तुतः मानवजीवन मर्यादापालक, समीप के निवास में, मैत्री में, पंथों के विसर्जन में, शत्रुता में, धैर्य के अवसरों पर स्थिर रहा करता है । विद्वानों ने जीवन की सात मर्यादाएं निर्धारित की हैं ।

8. **ओम् तन्तुं तन्वन्रजसो भानुमन्विहि ज्योष्मितः पथो रक्ष धिया कृतान् ।**
अनुल्वणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् ।।

—ऋग्वेद 10.53.6

1. रजसः—संसार का, 2. तंतुम्—तानाबाना, 3. तन्वन्—तनता बुनता हुआ, 4. भानुमं मन्वि—प्रकाश के पीछे जा, 5. धिया—बुद्धि से, 6. कृतान्—बनाए हुए, 7. ज्योतिष्मतः—प्रकाशयुक्त, 8. पथः रक्ष—मार्गों की रक्षाकर, 9. जोगुवाम्—निरंतर ज्ञान और कर्म का अनुष्ठान करना, 10. अतुल्वणं—उलझन रहित, 11. अपः—कर्म का, 12. वयत—विस्तृत करो, 13. मनुर्भव—मानव बन, 14. दैव्यम्—देवताओं के हितकारी, 15. जनम्—संतान को, 16. जनय—उत्पन्न कर

संसार का ताना बाना तनता, बुनता हुआ प्रकाश के पीछे जा ।

बुद्धि से बनाए हुए प्रकाशयुक्त मार्गों की रक्षा कर। निरंतर ज्ञान और कर्म का अनुष्ठान करने वालों के उलझनरहित कर्म को विस्तृत करो। इन उपायों से मानव बन और देवों के समान हितकारी संतान को उत्पन्न कर।

9. **ओ३म् सुक्तमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत।**
अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि।।

—ऋग्वेद 10.71.2

जैसे छलनी में छानकर सत्तू को साफ किया जाता है, उसी प्रकार जिस विषय में धीर तथा बुद्धिमान लोग ज्ञान रूपी छलनी द्वारा वाणी को शुद्ध करके प्रयोग करते हैं। वहाँ हितैषी विद्वान् लोग हित की बातों को समझते हैं। उनकी वाणी में कल्याणकारी लक्ष्मी निवास करती है।

10. **ओ३म् तृदिला अतृदिलासो अद्रयोऽश्रमणा अशृथिता अमृत्यवः।**
अनातुरा अजरा स्थामविष्णवः सुपीवसो अतृषिता अतृष्णजः।।

—ऋग्वेद 10.94.11

हे विद्वानो, हे वीरजनों! आप लोग दुष्टों व संशयों के काटने वाले और स्वयं कभी छिन्न-भिन्न न होने वाले बनो। आप लोग आदरणीय, कभी न थकने वाले, सत्कार्यों में शिथिल न होने वाले, मृत्युरहित, न घबराने वाले, जरारहित, सदैव गतिशील, नितान्त हृष्ट-पुष्ट, तृष्णा, लोभ रहित, निस्पृह निर्मोही बनो।

विद्वान् दुःखों व दुष्टों के हर्त्ता आदरणीय, आश्रमण सत्यकार्य में सदैव रता रहने वाले अमर एवं अजर हों। सदैव हृष्ट-पुष्ट एवं गतिशील एवं मोह से मुक्त रहो।

11. **ओ३म् अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।**
गोभाज इत्किलासथ यत् सनवथ पुरुषम्।।

—ऋग्वेद 10.97.5, यजुर्वेद 35.4

1. अ+श्वः+स्थ—अ का अर्थ है नहीं। श्वः का अर्थ है आगामीकाल। स्थ का अर्थ है स्थान, अश्वत्थ का अर्थ है वह स्थान जहाँ कल का भरोसा नहीं, जहाँ हम कल होंगे या नहीं, कुछ पता नहीं। 2. वो—तुम्हारी, 3. निषदनं—बैठक, 4. पर्णे—पत्ता, 5. वसतिष्कृता—पृथिवी निवास बना हुआ है, 6. गोभाज—वाणी, इन्द्रिय व किरणों का सेवन करने वाले, 7. इत्किलासथ—ही होओ, 8. यत्—जिस, 9. सनवथ—सेवन करो, 10. पुरुषम्—परमात्मा।

हे जीवो! जिस जगदीशवर ने कल ठहरेगा व नहीं ऐसे अनित्य संसार में तुम लोगों की स्थिति ही पत्ते के तुल्य चंचल जीवन में तुम्हारा निवास किया उस सर्वत्र परिपूर्ण परमात्मा को ही सेवन करो। उसके साथ पृथ्वी, वाणी, इन्द्रिय वा किरणों का सेवन करने वाले ही तुम लोग प्रयत्न के साथ धर्म में स्थिर हो जाओ।

12. ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव
यद्भद्रं तन्नऽआसुव —यजुर्वेद 30.3, ऋग्वेद 5.82.5

बुराई को त्यागे भलाई करें हम।
तुम्हारे ही गीतों को गाते रहें हम।।
वेदों के सागर को पाकर सदा ही।
गोते उसी में लगाते रहें हम।।
दुरितों को त्यागे सदा दूर भागें।
भावों को अच्छे जगाते रहें हम।
मेरा ज्ञान क्या है तेरा ही दिया है।
सभी को हमेशा सुनाते रहें हम।।
समर्पित तुम्हीं को तुम्हारा ही वैभव।
हृदय से तुम्हीं को बुलाते रहें हम।। —डॉ० योगेन्द्र कुमार

हे प्रभु! आप कृपया हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए और जो कल्याणकारी, गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं वे हमें प्राप्त कराइये।

13. ओ३म् अश्मन्वती रीयते सꣳरभध्वमुत्तिष्ठत प्र तरता सखायः।
अत्रा जहीमोऽशिवा येऽअसञ्छिवान्वयमुत्तरेमाभि वाजान्।।

—यजुर्वेद 35.10, ऋग्वेद 10.53.8, अथर्ववेद 12.2.26

पथरीली नदी वेग से बह रही है। हे साथियो! उठो, मिलकर एक दूसरे को सहारा दो और इस नदी को प्रबलता से तर जाओ। आओ, जो हमारे अकल्याणकारी संग्रह हैं, उन्हें हम यहीं छोड़ दें और कल्याणकारी सुखों, बलों और ज्ञानों को पाने के लिए हम इस नदी के पार हो जायें। प्रस्तुत मंत्र में इस संसार को पथरीली नदी कहा गया है।

14. ओ३म् अपाघमप किल्विषमय कृत्यामपो रपः।
अपामार्ग त्वमस्मदय दुःष्वप्न्यꣳसुव।। —यजुर्वेद 35.11

अघ, किल्विष, कृत्या, रप और दुःस्वप्न्य अर्थात् पाप, हत्या, मल व विक्षेप और कुस्वप्न ये पांच मानव जीवन के अभिशाप हैं। इनसे मुक्त रहने के लिए अपामार्ग को संबोधन किया गया है। अपामार्ग शब्द का निर्माण अप + अमार्ग से हुआ है। अप का अर्थ है पृथक रहना और अमार्ग का अर्थ है कुमार्ग। अतः अप + अमार्ग का अर्थ हुआ कुमार्ग से पृथक रहना। जो कुमार्ग से अलग रहता है और सुमार्ग पर चलता है वही अपामार्गी है।

15. ओम् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।

—ऋग्वेद 3.62.10, यजुर्वेद 3.35, 22.9, 30.2, 36.3, सामवेद 1462

1. ओ३म्–रक्षक, 2. भूः–प्राण प्रिय (सत्), 3. भुवः–दुःख नाशक (चित्), 4. स्व–आनंददायक (आनंद), 5. तत्–उस प्रभु को, 6. सवितः–सकल जगत् के उत्पादक, 7. वरेण्यं–ग्रहण करने योग्य, 8. भर्ग–शुद्ध तेज का, 9. देवस्य–प्रभु के, 10. धीमहि–धारण करें, 11. धियः–बुद्धियों को या कर्मों को, 12.यो–जो प्रभु, 13. नः–हमारी, 14. प्रचोदयात्–सन्मार्ग पर ला दें।

गद्यानुवाद –

हे प्रभु! आप सर्वरक्षक, प्राणधार, सुखस्वरूप, दुःखनाशक और सतचित् आनंद स्वरूप है।। आपही सृष्टि के उत्पादक, पालक, संहारक, वेदज्ञान दाता एवं कर्मफल दाता हैं। हम आपके प्रेरणादायक, शुद्धस्वरूप वरणीय, परमपवित्र, दिव्यस्वरूप का हृदय मन्दिर में ध्यान धरते हैं। आप हमारी बुद्धियों को कृपया सत्विचारों एवं सत्कार्यों में प्रेरित कीजिए।

पद्यानुवाद–

तुने हमें उत्पन्न किया पालन कर रहा है तू।
तुमसे ही पाते प्राण हम दुःखियों के कष्ट हरता है तू।
तेरा महान तेज है छाया हुआ सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु-वस्तु में तू हो रहा है विद्यमान।
तेरा ही धरते ध्यान हम मांगते तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर चला।।

16. **दृतेदृꣳह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षयन्ताम्।**
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।। **–यजुर्वेद 36.18**

हे परमेश्वर! मुझे दृढ़ बनाना। संसार के सारे प्राणी मुझको मित्र की दृष्टि से देखें। मैं भी सबको मित्र की दृष्टि से देखूं। हम सब भी परस्पर मित्र की दृष्टि से देखें।

17. ओ३म् ईशा वास्यमिदꣳसर्वयत्किञ्च जगत्यां जगत् ।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा, मा गृधः कस्यस्विद् धनम् ।।

—यजुर्वेद 40.1, ईशवस्योपनिषद् ।

1. ईश—ईश्वर से, 2. वास्याम्—व्याप्त है, 3. सर्वयत्—जो कुछ भी, 4. जगत्यां—इस संसार में, 5. तेन—उससे, 6. त्यक्तेन—त्यागपूर्वक, 7. भुञ्जीथा—भोगते रहो, 8. मागृधः—आसक्त मत हो, 9. कस्य—किसका, 10. स्विद्—हैं, धनम्—यह धन ।

इस ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी दिखाई दे रहा है सभी कुछ ईश्वर से व्याप्त है । ईश्वर इस संसार के कण कण में है । अतः प्रभु प्रदत्त प्रत्येक वस्तु का त्यागपूर्ण भोग करो और लालच मत करो क्योंकि यह धन किसी का भी नहीं है ।

18. ओ३म् कुर्वन्नेवेह कर्माणि, जिजीविषेच्छत्ꣳशतं समाः ।

एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ।।

—यजुर्वेद 40.2

1. कुर्वन्नेव—इस संसार में काम करता हुआ ही, 2. कर्माणि—कर्मों को, 3. जिजीविषेत्—जीने की इच्छा करें, 4. छतꣳसमा—सौ वर्षों तक, 5. एवं त्वयि—इस तरह यही साधन हैं, 6. नरे—तुझ, 7. नान्यथेतोऽस्ति—इसके भिन्न दूसरा कोई उपाय नहीं है ।

इस संसार में निष्काम कर्मों को करते हुए ही मनुष्य सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करे । यही एक साधन है जिसके द्वारा तुझ मनुष्य में कर्म लिप्त न होंगे । इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है । जो कुछ भी करो प्रभु समर्पित कर दो । ऐसा करने से मनुष्य कर्म बन्धन में नहीं बंधता है ।

19. ओ३म् वायुरनिलममृतमथेदं भसमान्तꣳशरीरम् ।
ओ३म् क्रतोस्मर क्लिवे स्मर कृतꣳस्मर ।।

—यजुर्वेद 40.15, ईशावास्योपनिषद् 2

1. वायु—आत्मा, 2. अनिलम्—अपार्थिव या अभौतिक, 3. अमृतम्—अमर, 4. अथ—और, 5. इदम् शरीरम्—यह शरीर, 6. भसमान्तम्—भस्म हो जाने वाला, 7. हे क्रतो—क्रियाशील पुरुष, 8. ओ३म् स्मर—परमात्मा का स्मरण कर, 9. क्लिवे स्मर—लोक की भलाई के लिए स्मरण कर, 10. कृतं स्मर—अपने किए हुए पिछले कर्मों को स्मरण कर ।

मानव को सदा याद रखना चाहिए कि उसकी आत्मा अमर है और शरीर नाशवान् है । मानव न केवल आत्मा है, न शरीर है अपितु शरीरस्थ आत्मा है । इसमें पांच कर्मेन्द्रियां— हाथ, पैर, वाणी, मलद्वार, मूत्रद्वार और पांच ज्ञानेन्द्रियाँ— आँख, नाक, कान, रसना और त्वचा, पांच भूत— पृथ्वी, वायु, जल, अग्नि और आकाश, प्राण और आत्मा इन 17 पदार्थों का एक संघात है । मानव के जीवन में यह संघात मृत्युपर्यन्त रहता है । व्यवहार में यह संघात इतना मिश्रित है कि इसका विश्लेषण करना कठिन हो जाता है ।

20. ओ३म् यशो मा द्यावापृथिवी यशो मेन्द्रबृहस्पती ।
यशो भगस्य विन्दतु यशो मा प्रतिमुच्यताम् ।
यशस्व्या३स्याः संसदोऽहं प्रवदिता स्याम् ।। —सामवेद 611
जगदीश करो यश मुझे प्रदान ईश मुझे उभय लोक में ।
दो यश पृथ्वी और द्युलोक में मुझे राजा अरु विद्वान् ।।
जैसे प्राप्त हो सम्मान ! जगदीश करो यश मुझे प्रदान ।
उत्तम वक्ता बन पाऊँ मैं विद्वत् सभा में मिले सम्मान ।
जगदीश करो मुझे प्रदान ।।

1. मा–मुझ को, 2. द्यावापृथिवी–द्युलोक और भूमि, 3. इन्द्रबृहस्पति–राजा और विद्वान, 4. भागस्य–ऐश्वर्य की, 5. विन्दुत–प्राप्त हो, 6. प्रतिमुच्यतम्–छूटे, 7. अस्या–इस, 8. संयदोऽहं–सभा का मैं, 9. प्रविदा–प्रगल्भ वक्ता, 10. स्याम्–होऊँ।

मुझको द्युलोक यश और भूमि यश, राजा विद्वान् ऐश्वर्य की कीर्ति प्राप्त हो। यश नहीं छूटे अपितु यश के कारण इस सभा का मैं प्रगल्भ वक्ता बन जाऊँ। हे प्रभो! आपकी कृपा से द्यु एवं पृथ्वी लोक हमारे यश के साधन बनें। राजा और विद्वान् मुझे कीर्ति प्राप्त करवायें। ऐश्वर्य का यश भी हमें प्राप्त हो। यश मेरा साथ कभी न छोड़ें। यश से युक्त मैं इस सभा का उत्तम वक्ता होऊँ। वेदानुशीलन से प्रतीत होता है कि प्रस्तुत मंत्र में प्रार्थना की गई है।

21. ओ३म् सहृदयं सामनस्यम अविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।। –अथर्व. 3.30.1

1. सहृदयं–सहृदयता (प्रेम), 2. सामनस्यम–एकमनता, 3. अविद्वेषं–निर्वैरता, 4. कृणोमि–करता हूं, 5. वः–मैं, 6. अन्यो अन्यमभि–एक दूसरे को ऐसा चाहो या प्रेम करो, 7. वत्सं जातिवाध्न्य–जैसे न मरने योग्य गाय उत्पन्न हुये बछड़े को प्यार करती है।

हे मनुष्यो! मैं तुम्हारे लिये सहायता, एकमनता और निर्वैरता का उपदेश करता हूँ। तुम एक दूसरे को ऐसा चाहो अथवा प्रेम करो जैसे न मरने योग्य गाय उत्पन्न हुये बछड़े को प्यार करती है। भावार्थ यह है कि सहृदयता उत्तम मन एवं निर्वैरता धारण करके परस्पर प्रेम का भाव बढ़ाना चाहिये। इसी से मानव-कल्याण होगा।

22. ओ३म् यत्पुरुषेण हविषा यज्ञं देवा अतन्वत।
अस्ति नु तस्माद् ओजीयो यद् विहव्यनेजिरे।।

–अथर्ववेद 7.5.4, 19.8.10

विविध सामग्रियों से जो यज्ञ किये जाते हैं उन यज्ञों से वे यज्ञ बहुत बड़े हैं जो जीवन को यज्ञिय बनाकर जीवन यज्ञ से मानव जाति को सुगंधित करते हैं। यही ज्ञान यज्ञ सर्वश्रेष्ठ है।

23. ओ३म् अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या।
तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः।।

—अथर्ववेद 10.2.31

1. अष्टाचक्रा—आठचक्र, 2. नवद्वारा—नौ द्वारों, 3. देवानां—देवों की, 4. पूरयोध्या—अजय नगरी, 5. तस्यां—इसमें, 6. हिरण्ययः—सुनहरी, 7. कोशः—कोष, 8. स्वर्गो—ज्योतिषे, 9. आवृत—ढका हुआ स्वर्ग है।

यह मानव शरीर आठ चक्र और नौ द्वारों वाली देवों की अजय नगरी है। इसमें ज्योति से ढका हुआ सुनहरी कोष है। यह स्वर्ग है क्योंकि आत्मिक आनन्द का भण्डार परमात्मा इसमें ही है।

24. ओ३म् स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।।

—अथर्ववेद 19.71.1

1. स्तुता—स्तुति की गई, 2. मया—मेरे द्वारा, 3. वरदा—वरों को देने वाली, 4. प्रचोदयन्तां—हम सब शुभ कर्मों के लिये प्रेरित हुआ करे, 5. पावमानी—पवित्र, 6. द्विजानाम्—विद्वानों द्वारा गाई हुई, 7. द्रविणं—धन-धान्य, 8. वर्चसम्—आध्यात्मिक तेज, 9. मह्यं दत्वा—मेरे अर्पण करके, 10. व्रजत—प्राप्त करो, 11. वर्चसम्—मोक्ष को।

मैने वेदरूपी माता की गोद में बैठकर ज्ञान के रस का पान कर लिया है। यह वेदवाणी मनुष्यों को पवित्र करने वाली है। हे विद्वानो!

मुझको अधोलिखित सात वरों को देकर मोक्ष को प्राप्त कीजिए–

1. पूर्ण जीवन, 2. जीवन शक्ति, 3. संतान, 4. गाय, बैल, घोड़ा आदि, 5. यश, 6. धन-धान्य, 7. आध्यात्मिक तेज ।

25. ओ३म् नकी रेवन्तं सख्याय विन्दसे पीयन्ति ते सुराश्वः ।
यदा कृणोषि नंदनु समूहस्यादित् पितवे हूयसे ।।

–अथर्ववेद 20.114.2

हे परमेश्वर ! तू उस बड़े धनी व्यक्ति को अपनी मित्रता के लिऐ कभी नहीं मिलता है जो मद्य से बढ़ा हुआ उन्मत्त पागल व्यक्ति तेरी हिंसा करता है । जब तू गर्जन करता है और यथावत् तू विचार करता, तभी तू पिता के समान बुलाया जाता है । कहने का भाव यह है कि जब मनुष्य अधिक दौलत कमा लेता है तो वह दौलत के नशे में पागल हो जाता है और जब परमेश्वर उसे तुच्छ कर देता है तब वह व्यक्ति परमेश्वर की महिमा को स्वीकार करता है ।

3. वेदसूक्तियाँ

वेदों के अध्ययन एवं अनुशीलन से प्रतीत होता है कि जैसे नदियों में गंगा, वृक्षों में पीपल, दही में मक्खन और पशुओं में गाय सर्वश्रेष्ठ है उसी प्रकार संसार के विभिन्न विद्वानों एवं गिन्नीज़ बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के अनुसार वेद संसार के पुस्तकालय में प्राचीनतम एवं श्रेष्ठतम ग्रंथ हैं। वेद चार हैं–ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। इन चारों वेदों का ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में क्रमशः चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा के हृदयों में प्रभु द्वारा प्रकट हुआ था। वेद के चार अर्थ हैं–ज्ञान, शक्ति, विचार और लाभ। वेदों में 20416 मंत्र, 1,53,826 शब्द, 8,64,000 अक्षर और 24000 छंद हैं। वेद स्वतः प्रमाण हैं। इसका अर्थ है इन्हें किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। वेदों में मिलावट नहीं की जा सकती है।

मैंने चारों वेदों का सांगोपांग अध्ययन करने के पश्चात्, कड़ी मेहनत एवं सच्ची लगन से इन में से 125 चुनिंदा महत्त्वपूर्ण सूक्तियों का चयन किया है जोकि विभिन्न शुभ अवसरों पर बहुधा बोली जाती हैं। ऐसा करके मैंने गागर में सागर को भरने का प्रयास किया है। इसके अतिरिक्त इन सूक्तियों के अर्थ भी लिख दिये गये ताकि साधारण व्यक्ति भी इन्हें समझ सके। चारों वेदों की महत्त्वपूर्ण सूक्तियों का विवरण अग्रलिखित हैं–

ऋग्वेद-सूक्तियाँ

1. **तवेद्धि सख्यमस्तृतम्।** ऋ. 1.15.5, सा. 229

   हे प्रभो! तेरी ही मैत्री अमिट है।

2. **दाता राधांसि शुम्भति।** ऋ. 1.22.8

   दानी धनों को शोभा प्रदान करता है।

3. **विष्णोः कर्माणि पश्यत।**

   सर्वव्यापक ब्रह्म के कर्मों को देखो।

   –ऋ. 1.22.19, यजु. 6.4., 13.33, सा. 1671, अथर्व. 7.26.6

4. **यच्छुभं याथना।** ऋ. 1.23.11
जो शुभ हो वही प्राप्त करो।

5. **भवत वाजिनः।** ऋ. 1.23.19, यजु. 9.6 अथर्व. 1.4.4
बलशील हो जाओ।

6. **मा न आयुः प्र मोषीः।** ऋ. 1.24.11, यजु. 18.49, 21.2
हमारे जीवन को बर्बाद न होने दो।

7. **सर्वं परिक्रोशं जहि।** ऋ. 1.29.7
सब रोना-धोना बंद कर।

8. **जम्भया कृकदाश्वम्।** ऋ. 1.29.7
दुःख देने वाले को मिटा दे।

9. **त्वे विश्वे अमृता मादयन्ते।** ऋ. 1.59.1
प्रभो! तुझमें सब भक्त आनंद पाते हैं।

10. **रूपं जरिमा भिनाति।** ऋ. 1.71.10
सौन्दर्य को बुढ़ापा नष्ट कर देता है।

11. **वि भजा, भूरि ते वसु।** ऋ. 1.81.6
खूब बांट, तेरा धन बहुत है।

12. **न त्वदन्यो मघवन्नस्ति भर्डिता।**
ऐश्वर्यवन्! तुझसे भिन्न कोई सुखदाता नहीं है।
—ऋ. 1.84.19, यजु. 6.67, सा. 247, 1723

13. **भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम।** ऋ. 1.89.8, यजु. 25,21, सा. 1874
हम कानों से भद्र सुनें।

14. **भद्रं पश्येमाक्षभिः।** ऋ. 1.89.8, यजु. 25.21, सा. 1874
हम आंखों से भद्र देखें।

15. **व्यशेम देवहितं यदायुः।** ऋ. 1.89.8, यजु. 25.21 सा. 1874
हम जीवन भर परोपकार करें।

16. **ज्योतिषा वि तमो ववर्थ।** ऋ. 1.91.22, यजु.34.22
ज्योति से अंधकार को हटा।

17. **एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति ।** ऋ. 1.164.46
एक सत् को ज्ञानी अनेक प्रकार से बोलते हैं ।

18. **माहं राजन्नन्यकृतेन भोजम् ।** ऋ. 2.28.9
राजन ! मैं दूसरे की कमाई न खाऊं ।

19. **धीतिमश्याः ।** ऋ. 2.31.7
धीरज रख ।

20. **वि पश्य ।** ऋ. 3.23.2
सब ओर देख ।

21. **इच्छन्ति त्वा सोम्यासः सखायः ।** ऋ. 3.30.1, यजु. 34,18
प्रभो ! प्रेमी भक्त तुझे चाहते हैं ।

22. **पश्यन्ति मायिनः कृतानि ।** ऋ. 3.38.9
ज्ञानी कर्मों को देखते हैं ।

23. **सखा सख्युः शृणवत् ।** ऋ. 3.43.4
मित्र मित्र की सुने ।

24. **अंगिरसो भवेमाद्रिं रुजेम ।** ऋ. 4.2.15
हम अंगारे बनें और पर्वत को तोड़ डालें ।

25. **मा निन्दत ।** ऋ. 4.5.2
निन्दा मत करो ।

26. **राया वयं ससवांसो मदेम** ऋ. 4.42.10, यजु. 7,10
हम धन वितरण करते हुए प्रसन्न हों ।

27. **उभयाहस्त्या भर ।** ऋ. 5.39.1, सा. 345
दोनों हाथों से दें ।

28. **मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः ।** ऋ. 5.81.1, यजु. 5.14, 11.4, 37.2
ब्रह्म की महिमा महान् है ।

29. **वृह मायाः ।** ऋ. 6.45.9
माया को काट डाल ।

30. **सुवीर्यस्य पतयः स्याम ।** —ऋ. 6.47.12, 10.13.1, यजु. 20.51

हम सुपराक्रम के स्वामी हों ।

31. **अप सेध शत्रून् ।** ऋ. 6.47.29, यजु. 29.55

शत्रुओं का वध कर ।

32. **विश्वदानीं सुमनसः स्याम ।** ऋ. 6.52.5

हम सदा सुप्रसन्न रहें ।

33. **अश्मा भवतु नस्तनूः ।** ऋ. 6.75.12, यजु. 29.49

हमारा शरीर सुदृढ़ हो ।

34. **विश्वा तरेम दुरिता ।** ऋ. 7.32.15, सा. 1683

हम सब बुराइयों को त्यागें ।

35. **शन्नो भवित्रं ।** ऋ. 7.35.9

हमारा भविष्य सुखद हो ।

36. **वयं भगवन्तः स्याम् ।** ऋ. 7.41.5, यजु. 34.38

हम ऐश्वर्यशाली हों ।

37. **बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्** ऋ. 7.59.12, यजु. 3.60

मृत्यु के बंधन से छूटूं, अमृत से नहीं ।

38. **स्याम तव प्रियासो ।** ऋ. 7.60.1

हे प्रभो ! हम तेरे प्यारे हों ।

39. **आजा भवति किं चन प्रिंयम् ।** ऋ. 7.83.2

संग्राम में सब कुछ प्रिय होता है ।

40. **विश्वेन्नरः स्वमत्यानि चक्रुः ।** ऋ. 7.91.3, यजु. 27.23

लोग अपनी सभी संतानों को सु-संतान बनायें ।

41. **अस्मां अवन्तु ते धिपः ।** ऋ. 8.3.1, सा. 239, 1421

हे प्रभो ! तेरी प्रेरणाएं हमारी रक्षा करें ।

42. **भूयाम ते सुमतौ ।** ऋ. 8.3.2, सा. 1422

हे प्रभो ! प्रेरणाएं हमारी रक्षा करें ।

43. **मा भमे, मा श्रमिष्म ।** ऋ. 8.4.7, सा. 1605

हम न डरें, न थकें ।

44. **रक्षसो दह ।** ऋ. 8.23.14, सा. 106

हे प्रभो ! राक्षसों को भस्म कर दे ।

45. **यथा वशंति देवास्तथेदसत् ।** ऋ. 8.28.4

देव जैसा चाहते हैं वैसा ही हुआ करता है ।

46. **वयं घा ते अपिष्मासि ।** ऋ. 8.32.7, सा. 230

हे प्रभो ! हम तो तेरे ही हैं ।

47. **तरन्तः स्याम दुर्गहा ।** ऋ. 8.43.30

हम कठिनाइयों को पार करने वाले हों ।

48. **यद्वीळयासि वीळु तत् ।** ऋ. 8.45.6

हे प्रभो ! जिसे तू बलवान् बनाता है । वह ही बलवान् है ।

49. **यो नो दाता स नः पिता ।** ऋ. 8.52.5

जो हमारा दाता है वह ही हमारा पिता है ।

50. **नो अभयं कृधि ।** ऋ. 8.61.13, सा. 274

हमें निर्भय कर ।

51. **वयं घा ते ।** ऋ. 8.66.13

हे प्रभो ! हम तेरे ही हैं ।

52. **त्वं हि सत्यो ।** ऋ. 8.90.4

हे प्रभो ! तू ही सत्य है ।

53. **त्वमस्माकं, तव स्मसि ।** ऋ. 8.92.32

हे प्रभो ! तू निस्संदेह वीरों को चाहने वाला है ।

54. **हरिः पवित्रे अर्षति ।** ऋ. 9.3.9, सा. 758

प्रभु पवित्र हृदय में प्रकट होता है ।

55. **ऋतस्य पन्थां न तरन्ति दुष्कृतः ।** ऋ. 9.73.6

कुकर्मी सत्य के पथ पर नहीं चलते ।

56. **यमो ददात्यवसानमास्मै ।** ऋ. 10.14.9
मृत्यु विश्राम देती है ।

57. **अकर्मा दस्युः ।** ऋ. 10.22.8
कर्म न करने वाला दस्यु है ।

58. **ऋषिः स यो मनुर्हितो ।** ऋ. 10.26.5
ऋषि वह है जो मनुष्य का हितकारी है ।

59. **अक्षैर्मा दीव्याः** ऋ. 10.34.13
जुआ मत खेलो ।

60. **मनुर्भव, जनया दैव्यं जनम् ।** ऋ. 10.53.6
मानव बन, दिव्य सन्तान उत्पन्न कर ।

61. **उत्तिष्ठत् प्रतरता सखायः ।** ऋ. 10.53.8
मित्रो ! उठो और पार उतरो ।

62. **वनते कार इज्जिनतिम् ।** ऋ. 10.53.11
कर्मकुशल ही विजय प्राप्त करता है ।

63. **देवस्य पश्य काव्यं ।** ऋ. 10.55.5
देव के काव्य को देख ।

64. **चारुरेधि ।** ऋ. 10.56.1, सा. 65
सुन्दर बन ।

65. **पश्येम नु सूर्यमुच्चन्तम् ।** ऋ. 10.59.4
हम उदय होते हुए सूर्य को ही देखें ।

66. **ऊर्ध्वो भव ।** ऋ. 10.70.1, यजु. 5.5
उच्च बन ।

67. **को दंपती समनसा वि यूयोदध ।** ऋ. 10.95.12
एक मन दंपती को कौन पृथक कर सकता है ?

68. **अनु सं रभध्वम् ।** ऋ. 10.108.6, यजु. 17.38,
मिलकर कार्य करो । साम. 1854

69. **प्रेता जयता नरः ।** ऋ. 10.103.13, यजु. 17.46
साम. 1862, अथर्व. 3.19.7

नरो विजय संपादन को प्रस्थान करो ।

70. **न सा सखा यो न ददाति सख्ये ।** ऋ. 10.117.4

वह मित्र नहीं जो मित्र के लिए त्याग नहीं करता ।

71. **केवलाघो भवति केवलादी ।।** ऋ. 10.117.6

अकेला खाने वाला पापी होता है ।

72. **कस्मै देवाय हविषा विधेम् ।**

केवल आनन्दस्वरूप प्रभु की भक्ति करें ।

ऋ. 10.121.1-9, यजु. 12.102, 13.4

73. **मन्त्रश्रव्य चरामसि** ऋ. 10.134.7, साम. 176

हम वेदमंत्रों के अनुसार आचरण करें ।

74. **श्रत ते समिध्यते** ऋ. 10.147.1, सा. 371

प्रभो ! मैं तेरे प्रति श्रद्धा रखता हूँ ।

75. **श्रद्धयाग्निः समिध्यते ।** ऋ. 10.151.1

आत्मा श्रद्धा से प्रकाशित होती है ।

यजुर्वेद-सूक्तियाँ

76. **विष्णो ! हव्यरक्ष ।** यजु. 1.4

हे प्रभो ! शरणागत की रक्षा कर ।

77. **ध्रुवमसि ।** यजु. 1.17

तू निश्चल है ।

78. **ब्रह्म गृभ्णीष्व ।** यजु. 1.18

विवेक धारण कर ।

79. **अन्तरिक्षं दृꣳह ।** यजु. 1.18

अंतकरण को दृढ़ कर ।

80. **दिवं दृꣳह ।** यजु. 1.18

बुद्धि को स्थिर कर ।

81. **स्विते मा धाः ।** यजु. 5.5

मुझे सुपथ पर स्थापित रख ।

82. **मनो मे हार्दि यच्छ ।** यजु. 6.21

मुझे हार्दिक मन दे ।

83. **रावासि ।** यजु. 6.30

तू दाता है ।

84. **ऊर्जं धत्स्व ।** यजु. 6.35

धैर्य बनाए रख ।

85. **पाप्मा हतो न सोमः ।** यजु. 6.35

पाप मरे, धर्म नहीं ।

86. **पाहि सोमम् ।** यजु. 7.4

धर्म की रक्षा कर ।

87. **ऋतस्य पथा प्रेत ।** यजु. 7.45

सत्य के मार्ग पर चलो ।

88. **प्रति ते जिह्वा घृतमुच्चरण्यत् ।** यजु. 8.24

तेरी वाणी प्रत्येक के प्रति स्नेह उंड़ेले ।

89. **मध्वः पिबतः मादयध्वं ।** यजु. 9.18

मधु का पान करो, आनंदित रहो ।

90. **सहस्व सर्वं पाप्मानम् ।** यजु. 12.99

सब कठिनाइयों को सहन कर ।

91. **आयुर्यज्ञेन कल्पताम् ।** यजु. 18.29

यह जीवन यज्ञ के द्वारा सफल होता है ।

92. **प्राणो यज्ञेन कल्पताम् ।** यजु. 18.29

आत्मा यज्ञ से बलबती होती है ।

93. मित्रं मे सहः । यजु. 20.6

धैर्य मेरा मित्र है ।

94. सूर्यस्ते महिमा । यजु. 23.2

सूर्य तेरी महिमा है ।

95. चन्द्रमसि महिमा । यजु. 23.4

चन्द्रमा तेरी महिमा है ।

96. ज्योतिषा बाधते तमः । यजु. 33.92

ज्योति से अंधकार हटाया जा सकता है ।

97. तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु । यजु. 34.1-6

मेरा मन शिव-संकल्प युक्त हो ।

98. मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजु. 36.18

हम इस संसार के प्रत्येक प्राणी को मित्र की दृष्टि से देखें ।

99. ओ३म् कृतो स्मर । यजु. 40.15

ओ३म ! का स्मरण कर ।

100. ओ३म् खं ब्रह्म । यजु. 40.17

ओ३म् सर्वव्यापक और महान् है ।

सामवेदसूक्तियाँ

101. मा हृणीय थाः । सा. 227

क्रोध मत कर ।

102. भद्र मन कृणुष्व । सा. 1560

कठोर वचन त्याग दे ।

अथर्ववेदसूक्तियाँ

103. संश्रुतेन गमेमहि । अथर्व. 1.1.4

हम सुने हुए उपदेश के साथ आचरण करें ।

104. मा श्रुतेन वि राधिषि अथर्व. 1.1.4

हम सुने हुए उपदेश के विरुद्ध व्यवहार न करें ।

105. अश्मानं तन्वं कृधि अथर्व. 1.2.2

शरीर को वज्र बना ।

106. वाचा वदामि मधुमत् । अथर्व. 1.34.3

मैं वाणी से मधुर बोलूं ।

107. सूरिरसि । अथर्व. 2.11.4

तू ज्ञानी है ।

108. अश्मा भवतु ते तनूः । अथर्व. 2.13.4

तेरा शरीर सुदृढ़ हो ।

109. मा क्षुधन्मा तृषत् । अथर्व. 2.29.4

कोई भूखा न प्यासा रहे ।

110. शतं जीव शरदो वर्धमानः । अथर्व. 3.11-4

उन्नति करता हुआ 100 वर्ष तक जी ।

111. शतहस्त समाहर, सहस्रहस्त संकिर । अथर्व. 3.24.5

सौ हाथों से कमा तथा हजार हाथों से दान कर ।

112. स उतिष्ठ प्रहि प्र द्रव । अथर्व. 4.12.6

तू उठ खड़ा हो जा और आगे उन्नति कर ।

113. प्र मृणीत शत्रुन् । अथर्व. 5.21.11

शत्रुओं को मार डालो ।

114. मा पुरा जरसो मृथाः । अथर्व. 5.30.17

बुढ़ापे से पहले मत मर ।

115. मृत्यो ! नमोऽस्तु ते । अथर्व. 6.13.1

मृत्यो ! तेरा स्वागत है ।

116. ज्योक् पश्येम सूर्यमुच्चरन्तम् । अथर्व. 6.62.3

उदय होते हुए सूर्य को हम चिरकाल तक देखें ।

117. यो जिनाति तमिज्जहि । अथर्व. 6.134.3

जो अत्याचार करता है उसे ही मार ।

118. वयं जयेम । अथर्व. 7.50.4

हम विजयी हों ।

119. आ रोह तमसः । अथर्व. 8.1.8

अंधकार से ऊपर उठ ।

120. मात्र तिष्ठ पराङ्मनाः । अथर्व. 8.1.9

उदास होकर यहां मत रह ।

121. मा बिभेः । अथर्व. 8.2.24

मत डर ।

122. त्वचं यातुधानस्य भिन्धि । अथर्व. 8.3.4

अत्याचारी की खाल उधेड़ दे ।

123. माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः ।। अथर्व. 12.1.12

पृथ्वी मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूँ ।

124. ग्रावा शुम्भाति मलगइव वस्त्रा । अथर्व. 12.3.21

उपदेश व्यक्तियों को वैसे ही शुद्ध करता है
जैसे धोबी वस्त्रों को ।

125. सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु । अथर्व. 19.15.6

सब दिशाएं मेरी मित्र हों ।

4. वेदप्रश्नोत्तरी

1. चारों वेदों के क्या नाम हैं और इनका विषय क्या है?

उत्तर : ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद चार वेद हैं। ऋग्वेद ज्ञानकाण्ड है, यजुर्वेद कर्मकाण्ड है, सामवेद उपासनाकाण्ड है और अथर्ववेद विज्ञानकाण्ड है। इसलिये ऋग्वेद मस्तिष्क का वेद है, यजुर्वेद हाथों का वेद है, सामवेद हृदय का वेद है और अथर्ववेद उदर का वेद है। इसलिये विद्यानंद ''विदेह'' लिखते हैं—

ऋग्वेद ज्ञानवेद, यजुर्वेद साधना वेद, सामवेद गीतिवेद और अथर्ववेद योगवेद है।

—विदेह वाणी (दर्शन का अधिकार पृ० 105)

2. चारों वेदों के मंत्रों, शब्दों, अक्षरों, छंदों, शाखाओं की संख्या कितनी है?

उत्तर : चारों वेदों में 20,416 मंत्र, 1,53,826 शब्द, 8,64,000 अक्षर और 24000 छन्द हैं।

परन्तु इसके विषय में विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मत हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि ऋग्वेद में कुछ मंत्र ऐसे हैं जिनको किसी समय चार-चार मंत्र मानकर गिनते रहे हैं और किसी समय उनको चार-चार पद का एक मंत्र मानते रहे हैं। इसलिये विभिन्न विद्वानों ने वेदों की मंत्र संख्या विभिन्न लिखी है। पंडित युधिष्ठिर मीमांसक जी के मतानुसार इनकी संख्या का विवरण इस प्रकार है—

1. ऋग्वेद = 10,521 मंत्र।
2. यजुर्वेद = 1,975 मंत्र।
3. सामवेद = 1,873 मंत्र।
4. अथर्ववेद = 5,977 मंत्र।

जोड़ = 20,346 मंत्र।

इसी प्रकार महर्षिदयानंद जी के मतानुसार वेदों के मंत्रों की

संख्या का विवरण इस प्रकार है :–

1. ऋग्वेद	=	10,589 मंत्र ।
2. यजुर्वेद	=	1,975 मंत्र ।
3. सामवेद	=	1,875 मंत्र ।
4. अथर्ववेद	=	5,977 मंत्र ।
जोड़	=	20,416 मंत्र ।

अतः महर्षि दयानंद जी का मत सर्वमान्य है ।

इसके अतिरिक्त वेदों में 1131 शाखाएँ थी जैसे ऋग्वेद की 21, यजुर्वेद की 101, सामवेद की 1000 और अथर्ववेद की 9 शाखाएँ थी । परन्तु आज इनमें से केवल 10 शाखाएँ ही उपलब्ध हैं ।

3. ऋग्वेद में कितने मंडल, सूक्त और मंत्र हैं और इसके ऋषि का क्या नाम है ?इसका सर्वप्रथम मंत्र कौनसा है ?

उत्तर : ऋग्वेद में 10 मंडल, 1028 सूक्त, 10,589 मंत्र हैं और इसके ऋषि का नाम अग्नि है । इसका सर्वप्रथम मंत्र निम्नलिखित है–

ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम ।
होतारं रत्नाधातमम् ।।

मैं उस प्रभु की जोकि संसार में अनादि, यज्ञ प्रकाशक, सब ऋतुरचक, महादानी रत्ननिर्माता, सबके अग्रणीय प्रभु की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करता हूँ । वही मेरा एकमात्र उपास्यदेव है ।

4. यजुर्वेद में कितने अध्याय और मंत्र हैं और इसके ऋषि का क्या नाम है ?

उत्तर : यजुर्वेद में 40 अध्याय और 1975 मंत्र हैं और इसके ऋषि का नाम वायु है ।

5. सामवेद में कितने मंत्र हैं और इसके ऋषि का क्या नाम है ।

उत्तर : सामवेद में 1875 मंत्र हैं और इसके ऋषि का नाम आदित्य है ।

6. अथर्ववेद में कितने काण्ड, सूक्त और मंत्र हैं और इसके ऋषि का क्या नाम है।

उत्तर : अथर्ववेद में 20 कांड, 731 सूक्त और 5977 मंत्र हैं और इसके ऋषि का नाम अंगिरा है।

7. वेदों में सर्वश्रेष्ठ मंत्र कौन सा है?और क्यों?

उत्तर : गायत्रीमंत्र वेदों का सर्वश्रेष्ठ मंत्र है। जोकि इस प्रकार है–

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।

हे प्रभु! आप सत्-चित्-आनंद हैं। आप ही सृष्टि के उत्पादक, पालक, सहायक, वेदज्ञानदाता एवं कर्मफल प्रदाता है। हम आपके प्रेरणादायक, शुद्धस्वरूप, वरणनीय, परमपवित्र, दिव्यस्वरूप का हृदयमंदिर में ध्यान करते हैं। आप हमारी बुद्धियों को कृपया सत् विचारों एवं सत्कार्यों में प्रेरित कीजिए।

8. महर्षि दयानंद जी का सर्वप्रिय मंत्र कौन सा था?

उत्तर : महर्षि दयानंद जी का सर्वप्रिय मंत्र निम्नलिखित है–

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव
यद्भद्रं तन्नऽआसुव। –यजुर्वेद 30.3, ऋग्वेद 5.82.5

हे प्रभु! आप कृपया हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कीजिए और जो कल्याणकारी गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ है वे हमें प्राप्त कराइये। यही कारण है कि महर्षि दयानंद जी ने यजुर्वेद के प्रत्येक अध्याय का आरंभ इसी मंत्र से किया था।

9. वेदांग कितने हैं और उनके नाम एवं विषय क्या-क्या हैं?

उत्तर : वेदांग 6 हैं जिनका संक्षिप्त विवरण अग्रलिखित है–

1. शिक्षा – इससे वेदमंत्रों का उच्चारण आदि जाना जाता है। इसके तीन अंग हैं–उच्चारण, शब्दों का स्वरूप और उनका अर्थ। इसमें

पाणिनिकृत पाणिनीय शिक्षा आदि ग्रंथ आते हैं ।

2. कल्प – इसमें यज्ञ का विधान आता है । कल्प का अर्थ है बनाना-सुधार-संस्कार द्वारा निर्माण करना । इसमें साधारण यज्ञ से लेकर अश्वमेध आदि बड़े-बड़े यज्ञों के प्रकार का वर्णन है ।

3. व्याकरण – इसमें वैदिक व्याकरण के नियम होते हैं व्याकरण का शब्दार्थ है पृथक्करण । इस प्रकार शब्दों की चीरफाड़ करने में सहायक शास्त्र, व्याकरण कहलाता है । इसमें पाणिनिकृत अष्टाध्यायी, पातंजलि कृत महाभाष्य आते हैं ।

4. निरुक्त – निरुक्त में 14 अध्याय हैं । वस्तुतः इसमें 12 अध्याय हैं और 2 परिशिष्ट रूप में हैं । निरुक्त वैदिक शब्दों की निरुक्ति है । निरुक्ति का अर्थ है व्युत्पत्ति । निरुक्त का सर्वमान्य मत है कि प्रत्येक शब्द किसी न किसी धातु के साथ अवश्य सम्बद्ध रहता है । सारे शब्द किसी न किसी धातु से निर्मित हैं । यह वैदिक शब्दों की व्याख्या करता है । यास्क मुनि कृत निघण्टु पर ही स्वयं यास्क मुनि का भाष्य निरुक्त कहलाता है । निघण्टु विश्व का प्राचीनतम शब्दकोष माना जाता है ।

5. छंद – जिसमें भिन्न अक्षरों की एक निश्चित् संख्या निर्धारित हो उसे छंद कहते हैं । छंदों की गिनती सात स्वरों के अनुपात से सात है । कुछ और भी छंद हैं । परन्तु वे इन्हीं सात छंदों के अन्तर्गत आते हैं । इसमें पिंगल ऋषि कृत पिंगल सूत्र आते हैं ।

6. ज्योतिष – इसमें भूगोल एवं खगोल विद्या आदि का उल्लेख है । गणित और विज्ञान इसका मुख्य प्रयोजन है । वस्तुतः गणित ज्योतिष वेदानुकूल है परन्तु फलित ज्योतिष नहीं, क्योंकि यह केवल निराधार एवं अनुमान मात्र है । ज्योतिष के विषय में कहा गया है–

तद्वदेतां शास्त्राणां नागानां मणयो यथा ।

तद्वद्वेतां शास्त्राणां गणितं मूर्धनि स्थितम् ।।

जैसे मयूरों के सिर पर शिक्षा, सर्पों के शिर पर मणियां होती हैं। उसी प्रकार वेदांग शास्त्रों में गणित सबसे ऊपर है। वेदांग के विषय में आचार्य भास्कर लिखते हैं–

शब्द शास्त्रं मुखं ज्योतिषं चक्षुषी,
श्रोत्र मुक्त निरुक्तं च कल्पः कैरो।
या तु शिक्षास्य वेदस्यसा नासिका,
पदपद्यन्दयं छंद आद्यैबुधै।।

व्याकरण वेद के मुख के, ज्योतिष नेत्रों के और निरुक्त श्रोत्र के समान हैं कल्प हाथों के समान, शिक्षा नासिका के समान हैं। पांव छंद के समान हैं। ऐसा प्राचीन विद्वानों का विचार है।

10. क्या चारों वेदों का विभाजन महर्षि वेदव्यास ने किया था?

उत्तर : नहीं। जैसाकि अथर्ववेद में लिखा है–

ऋचः सामानिच्छन्दांसि पुराणं यजुषासह
उच्छिष्टाज्जा ज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रितः।

–अथर्ववेद 11.7.24

प्रस्तुत मंत्र में चारों वेदों के नाम एक साथ आये हैं। वे सिद्ध करते हैं कि चारों वेदों का ज्ञान एक साथ प्राप्त हुआ है न कि क्रमिक व्यवस्था से। इससे यह भी ज्ञात होता है कि वेदों का विभाजन महर्षि वेदव्यास ने नहीं किया था अपितु प्रभु द्वारा किया गया था। महर्षि वेदव्यास ने केवल चारों वेदों की शिक्षा अपने शिष्यों, पैल, वैशम्पायन, जैमिनि एवं सुमन्तु को दी थी।

11. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका को महर्षि दयानंद ने कितने समय में लिखा था?

उत्तर : महर्षि दयानंद ने 20.8.1876 ई० को दिन मंगलवार को पं० भीमसैन ज्वालादत्त आदि को ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका लिखवाना आरंभ किया था परन्तु इसकी समाप्ति लगभग 5 महीने 15 दिन में हुई।

12. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में कितने अध्याय एवं विषय हैं और इसकी क्या महत्ता है?

उत्तर: 36 अध्याय और 52 विषय।

वस्तुतः ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका वेदों की कूंजी है और स्वामी विद्यानंद सरस्वती कृत भूमिका भास्कर ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका की कूंजी है जिसमें लेखक ने प्रस्तुत ग्रंथ की विशद् व्याख्या की है।

पंडित भगवद्दत अपने ग्रंथ ''वैदिक वाङ्मय का इतिहास'' (द्वितीय भाग) में लिखते हैं–

दयानंद सरस्वती की ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका उनकी असाधारण योग्यता का जीवित प्रमाण है। वेद का अभ्यास करने वाले दयानंद सरस्वती के विचार से कितने ही असहमत हों, परन्तु भूमिका का पाठ करके वह एक बार कण्ठ से उनकी प्रशंसा करने लगते हैं। जैसे मैक्समूलर लिखते हैं–

> **We may divide the sanskrit literature beginning with the Rigveda and ending with Dayananda's of intorduction to his edition of the Rigveda, his by no means uninteresting Rigveda Bhumika into two great periods.** —India what can it teach us III (P-87-88)

संस्कृत वाङ्मय का आरंभ ऋग्वेद से है और अन्त दयानंद सरस्वती की ऋग्वेदादिभूमिका पर। यह किसी प्रकार भी अरुचिकर नहीं। –पृ० 87-88

13. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में 33 कौन-कौन से देवता हैं?

उत्तर: ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में ''वेदविषयविचार'' नामक अध्याय में 33 देवता निम्नलिखित हैं–

1. 8 वसु – अग्नि, पृथिवी, वायु, अन्तरिक्ष, द्यौः, चन्द्रमा, और नक्षत्र। क्योंकि सब पदार्थ इन्हीं में बसते हैं इसलिय इन्हें वसु कहा जाता है।

2. 11 रुद्र – 10 प्राण अर्थात् प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनञ्जय और 11वां आत्मा। क्योंकि जब ये शरीर से निकल जाते हैं तो सगे संबंधी रोते हैं इसलिये इन्हें रुद्र कहा जाता है।

3. 12 आदित्य – 12 आदित्य, 12 महीनों को कहते हैं क्योंकि ये जगत् के पदार्थों का आदान करते चले जाते हैं। इसलिये इन्हें आदित्य कहते हैं।

4. एक इन्द्र (बिजली)।

5. प्रजापति (यज्ञ)।

14. वेदानुसार सृष्टि का काल कितना है और सृष्टि सृजन हुये कितने वर्ष व्यतीत हो चुके हैं?

उत्तर : वेदानुसार सृष्टि का काल 4,32,00,00,000 वर्ष हैं और सृष्टि सृजन हुये 1,96,08,53,120 वर्ष हो चुके हैं। इस प्रकार अभी 2,35,91,46,880 वर्ष शेष हैं। इसी प्रकार विभिन्न वैज्ञानिकों एवं इतिहासकारों ने भी वेदों की भाँति पृथ्वी की आयु लगभग 2 अरब वर्ष मानी है जिसका विवरण निम्नलिखित है–

The age of the earth is about two thousand million year.

—Dr. William Rose (Outline of Modern knowledge P-152

पृथ्वी की आयु लगभग 2 अरब वर्ष है।

Our globe must be about two million years old and can in no case be much older.

—Lecomte Dunany (Human Defriay P-48

हमारी पृथ्वी लगभग 2 अरब वर्ष पुरानी है और किसी भी अवस्था में इससे अधिक पुरानी नहीं।

Asrtomomers and Mathematicians give us 200 million years as the age o the earth as body separate from sun.

—H.G. Wels Outline of Histroy

ज्योतिषी एवं गणितज्ञ सूर्य से पृथक् हुई पृथ्वी की आयु लगभग 2 अरब वर्ष बताते हैं।

15. कौन से भारतीय विद्वान् ने सर्वप्रथम वेदों का अनुवाद हिन्दी भाषा में किया और उन्होंने कितने मंत्रों का भाष्य किया?

उत्तर : महर्षि दयानंद ने सर्वप्रथम वेदों का भाष्य हिन्दी भाषा में किया था। परन्तु दुर्भाग्यवश यजुर्वेद के 1975 और ऋग्वेद के 5,649 मंत्रों (7 मण्डल, 62 सूक्त, 2 मंत्र) तक ही वेदों का भाष्य कर पाये थे। इस प्रकार उन्होंने वेदों के 20,416 मंत्रों में से 7,624 मंत्रों का ही भाष्य किया था और शेष 12,792 वेदमंत्रों का भाष्य वे अकाल मृत्यु के कारण नहीं कर पाये।

16. कौन से भारतीय विद्वान् ने सर्वप्रथम वेदों का अनुवाद अंग्रेज़ी भाषा में किया था।

उत्तर : डॉ० सत्य प्रकाश जी ने विदेशी लेखक ग्रिफ़िथ की भाँति अंग्रेज़ी में चारों वेदों का 23 विभिन्न खंडों में भाष्य किया था।

17. अध्वर शब्द के क्या अर्थ हैं और वेदों में इसका कितनी बार प्रयोग किया गया है?

उत्तर : अध्वर शब्द यज्ञ का पर्यायवाची है। अ का अर्थ है नहीं ध्वर का अर्थ हैं हिंसा। इसलिये यज्ञों में हर प्रकार की हिंसा निषिद्ध है।

अध्वर शब्द ऋग्वेद में 43 बार, यजुर्वेद में 43 बार, सामवेद में 8 बार तथा अथर्ववेद में 6 बार आया। इस प्रकार इसके प्रयोग चारों वेदों में 100 बार हुआ। इसलिये वेदों में यज्ञ को कामधुक् भी कहा गया है। जिसका अर्थ है—भावों एवं बाधाओं को दूर करने वाला। अतः यास्क आचार्य लिखते हैं—

अध्वर इति यज्ञ नाम ध्वनि हिंसा कर्मा तत्प्रतिषेधः।

—निरुक्त 18.8

यज्ञ का नाम अध्वर है जिसका अर्थ है हिंसारहित कर्म।

18. (1) यज्ञ की आत्मा क्या है ?

(2) यज्ञ के प्राण क्या है ?

(3) यज्ञ का सार क्या है ?

(4) यज्ञ के विभिन्न देवों का मुख क्या है ?

(5) यज्ञ की सफलता क्या है ?

उत्तर : (1) यज्ञ की आत्मा स्वाहा है इसका भाव है कि यथाशक्ति हर प्रकार का त्याग । अतः यज्ञ में इस शब्द का बार-बार प्रयोग किया गया ।

(2) यज्ञ के प्राण इदं न मम है । यह मेरे लिये नहीं है । यज्ञ में इस शब्द को बार-बार प्रयोग किया गया है ।

(3) यज्ञ का सार सुगंधि है जिससे चतुर्दिक सुगंधि फैले, वही यज्ञ है जिससे दुर्गंध फैले वह यज्ञ नहीं है ।

(4) यज्ञ के विभिन्न देवों का मुख आहुतियों की अग्नि है ।

(5) यज्ञ का सार दान है ।

19. वेदों में ओ३म् शब्द कहाँ-कहाँ प्रयुक्त हुआ है ?

उत्तर : वेदों में केवल यजुर्वेद में केवल तीन स्थानों पर ओ३म् शब्द प्रयुक्त हुआ है– 1. ओम् प्रतिष्ठ–ओ३म् में समाहित हो (यजुर्वेद 2. 13), 2. ओम् क्रतोस्मर–हे कर्मशील मानव ! तू ओम का उच्चारण कर (यजुर्वेद 40.19), 3. ओम् खं ब्रह्म–ओ३म् आकाशवत् व्यापक होने से और सबसे बड़ा होने से ईश्वर का नाम है । (यजुर्वेद 40.17)

20. आत्मा का मोक्षकाल कितने समय का होता है ?

उत्तर : सृष्टि का काल 4 अरब 32 करोड़ वर्ष है । यह ब्रह्मा का एक दिन है और इतने ही वर्षों की ब्रह्मा की रात्रि होती है । इस प्रकार आत्मा का मोक्ष काल = 4,32,00,00,000× 2×360×10=31 नील, 10 खरब, 40 अरब वर्ष (31,10,40,00,00,00,000) तक आत्मा

मुक्ति में रहती है। मोक्षकाल को इस प्रकार भी समझा जा सकता है–4,32,00,00,000 ×2×36,000 अर्थात् एक बार सृष्टि की उत्पत्ति प्रलय में 8 अरब 64 करोड़ वर्ष का समय लगता है। इस प्रकार 36,000 बार सृष्टि की उत्पत्ति एवं प्रलय में जितना समय लगता है वह आत्मा का मोक्ष काल होता है।

21. जगत् निर्माण के तीन कारण कौन-कौन से हैं?

उत्तर : जगत् के निर्माण के निम्नलिखित तीन कारण है?

1. निमित्त कारण (Efficient Cause) – यह वह कारण होता है कि जिसके बनाने से कुछ बने, न बनाने से न बने। अतः इसका भाव यह है कि जगत् को बनाने वाला। परमात्मा जगत्-निर्माता होने के कारण ही इसका निमित्त कारण है। जिस प्रकार कुम्हार घड़े को बनाने वाला होने के कारण घड़े का निमित्त कारण है। वस्तुतः परमात्मा जगत्-निर्माण के बाद उससे अलग नहीं होता परन्तु व्यक्ति हो जाता है।

2. साधारण कारण (Resultant Cause) – वह होता है जो बनाने में साधन हो। इसका भाव यह है कि जो बनाने में साधन एवं प्रयोजन हो। इसी प्रकार कुम्हार ने ग्राहकों के लिये घड़ा बनाया है। अतः ये आत्माएं घड़ा, दिशा, आकाश, प्रकाश आदि जगत् के साधारण कारण हैं।

3. उपादान कारण (Material Cause) – उपादान कारण उसको कहते हैं जिसके बिना कुछ न बने। इसका भाव यह है कि जिसका ग्रहण करके ही उत्पन्न होवे और कुछ बनाया जाये और जिसके बिना कुछ न बने। जैसे परमात्मा ने प्रकृति से जगत् को बनाया है और इसी प्रकार कुम्हार मिट्टी से घड़ा बनाता है। अतः ये प्रकृति जगत् का उपादान कारण है। परन्तु परमात्मा का कोई उपादान कारण नहीं होता क्योंकि वह अनादि है।

अतः जगत् निर्माता के तीन कारणों से ही वेदों का त्रैतवाद का सिद्धान्त यथार्थवादी है जिसके अनुसार परमात्मा, आत्मा एवं प्रकृति पृथक्-पृथक् सत्ताएं हैं। परमात्मा साक्षी है आत्मा पक्षी है और प्रकृति वृक्ष है।

22. वेदानुसार 7 विधि और निषेध कौन-कौन से हैं?

उत्तर : वेदानुसार निम्नलिखित 7 विधि-निषेध हैं–

विधि (मर्यादाएं) 1. सुविचार, 2. सुदृष्टि, 3. सुश्रुति, 4. सुभावना, 5. सुभाषण, 6. सुभक्षण, 7. सुस्पर्श।

निषेध (अमर्यादाएं) 1. चोरी करना, 2. व्यभिचार करना, 3. शराब पीना, 4. गर्भ में बच्चे का मारना, 5. विद्वानों की हत्या करना, 6. बुरे कर्म को बार-बार करना, 7. पाप करके झूठ बोलना।

23. संसार में कौनसा ग्रंथ प्राचीनतम एवं सर्वश्रेष्ठतम है?

उत्तर : गिन्नीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स के अनुसार वेद ही संसार के प्राचीनतम् एवं श्रेष्ठतम ग्रंथ हैं, क्योंकि वेद स्वतः प्रमाण हैं और अन्य ग्रंथ परतः प्रमाण हैं। इन में आज तक मिलावट भी नहीं की गई है। क्योंकि वेद में मन्त्र है, मन्त्र कोई ईश्वर के अतिरिक्त नहीं बना सकता, ऋषियों महर्षियों द्वारा श्लोक बनाये गए हैं, जैसे महाभारत आदि में श्लोक हैं, मन्त्र नहीं। मन्त्र केवल वेद में हैं।

24. कः स्विदेकाकी चरति कऽउस्विज्जायते पुनः।
किꣳस्विद्धिमस्य भेषजं किम्वावपनं महत्॥ –यजुर्वेद 23.45

1. कौन अकेला चलता है?
2. कौन बार-बार उत्पन्न होता है?
3. हिम की औषधि क्या है?
4. बीज बोने एवं काटने का बहुत बड़ा स्थान कौन-सा है?

उत्तर : **सूर्यऽएकाकी चरति, चन्द्रमा जायते पुनः ।**

अग्निर्हिमस्य भेषजं भूमिरावपनं महत् ।। —यजुर्वेद 23.46

1. सूर्य अकेला चलता है ?

2. चन्द्रमा बार-बार उत्पन्न होता है ?

3. आग हिम की औषधि है ?

4. भूमि बीज बोने एवं काटने का बहुत बड़ा स्थान है ?

25. **किꣳस्वित् सूर्यसमं ज्योतिः किꣳसमुद्रसमꣳसरः ।**

किꣳस्वित् पृथिव्यै वर्षीयः कस्य मात्रा न विद्यते ।।

—यजुर्वेद 23.47

1. सूर्य के समान ज्योति क्या है ?

2. सागर के समान तालाब कौन सा है ?

3. पृथिवी से बड़ा क्या है ?

4. मात्रा किसकी नहीं होती है ।

उत्तर : **ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिर्द्यौः समुद्रसमꣳसरः ।**

इन्द्र पृथिव्यै वर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते ।।

—यजुर्वेद 23.48

1. सूर्य के समान ज्योति ब्रह्म (ज्ञान) है ?

2. सागर के समान तालाब द्यौ (मानव मस्तिष्क) है ?

3. इन्द्र (आत्मा) पृथिवी से बड़ा है ?

4. गौ (वाणी) की मात्रा नहीं होती है ।

लेखक द्वारा प्रकाशित एवं निःशुल्क वितरित पुस्तकों की सूची :–

1. रामचरितमानससार
2. गीतासार
3. उपनिषद्सार
4. सत्यार्थप्रकाशसार
5. भक्ति
6. सुखीजीवन
7. आत्मबोध
8. वेदवाणी
9. वैदिकसाहित्य
10. अमृतवाणी
11. महर्षि दयानंद
12. स्वामी विवेकानंद
13. शरणागति
14. वैदिक रामायण
15. क्या आप जानते हैं ?
16. शेर-ओ-शायरी
17. ओ३म्
18. गायत्रीरहस्य
19. अमर धर्मग्रंथ

लेखक द्वारा अप्रकाशित पुस्तकों की सूची :–

1. अमर नीतिग्रंथ
2. पुराणपरिचय
3. ईश्वरसिद्धि
4. राष्ट्रभाषा हिन्दी
5. आर्यसमाज के महामानव
6. संस्कार
7. गीतांजलि
8. आर्यसमाज
9. ज्ञानामृत
10. यज्ञ
11. संत
12. संतवाणी
13. भर्तृहरिशतक
14. ब्रह्मचर्य
15. गृहस्थ
16. धर्म
17. कर्म
18. मन
19. सुखी कौन?
20. भारत के क्रांतिकारी
21. भारत के भक्त
22. प्रभुभक्ति
23. वेदसार
24. ज्ञानगंगा
25. पाँच शत्रु
26. सच्ची वाणी
27. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम
28. महावीर हनुमान
29. योगिराज श्रीकृष्ण
30. आदिशंकराचार्य
31. आचार्य चाणक्य
32. स्वामी रामतीर्थ
33. दस गुरु
34. आत्मकथा
35. वैदिक मनुस्मृति
36. वैदिक उपनिषद्वाणी
37. वैदिक दर्शनवाणी
38. वैदिक महाभारत
39. वैदिक गीता
40. General English (Part I to V) (For All Classes)
41. Great Thoughts
42. Great Indians
43. Great Thinkers
44. Great Scientists
45. सामान्य हिन्दी (भाग I-II) (सब कक्षाओं के लिये)
46. 1000 हिन्दी साहित्य प्रश्नोत्तरी
47. हिन्दी साहित्य का इतिहास
48. भाषा विज्ञान
49. आलोचना

कृपया पाठकगण इस ओर भी ध्यान दें कि इनकी निम्नलिखित पुस्तकों को इनकी Website : www.dpkapoorbooks.co.in पर भी देखा जा सकता है।

1. अमृतवाणी
2. आर्यसमाज
3. आर्यसमाज के महामानव
4. अमर नीतिग्रंथ
5. अमर धर्मग्रंथ
6. ईश्वरसिद्धि
7. गायत्रीरहस्य
8. ज्ञानामृत
9. गीतांजलि
10. क्या आप जानते हैं ?
11. ओ३म्
12. पुराणपरिचय
13. राष्ट्रभाषा हिन्दी
14. संस्कार
15. संत
16. संतवाणी
17. शरणागति
18. शेर-ओ-शायरी
19. यज्ञ
20. भर्तृहरिशतक
21. ब्रह्मचर्य
22. गृहस्थ
23. धर्म
24. कर्म
25. मन
26. सुखी कौन ?
27. भारत के क्रांतिकारी
28. भारत के भक्त
29. प्रभुभक्ति
30. वेदसार
31. ज्ञानगंगा
32. पाँच शत्रु
33. सच्ची वाणी
34. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम
35. महावीर हनुमान
36. योगिराज श्रीकृष्ण
37. आदिशंकराचार्य
38. आचार्य चाणक्य
39. महर्षि दयानंद
40. स्वामी विवेकानंद
41. स्वामी रामतीर्थ
42. दस गुरु
43. आत्मकथा
44. वैदिक साहित्य

(जारी...)

45. वैदिक मनुस्मृति
46. वैदिक उपनिषद्वाणी
47. वैदिक दर्शनवाणी
48. वैदिक रामायण
49. वैदिक महाभारत
50. वैदिक गीता
51. Great Thoughts
52. Great Indians
53. Great Thinkers
54. Great Scientists
55. General English
(Part I to V)
(For All Classes)
56. सामान्य हिन्दी (भाग I-II)
(सब कक्षाओं के लिये)
57. 1000 हिन्दी साहित्य प्रश्नोत्तरी
(सब प्रकार की प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए)
58. हिन्दी साहित्य का इतिहास
(पंजाब विश्वविद्यालय की एम.ए. हिन्दी की कक्षा के लिए)
59. भाषा विज्ञान
(पंजाब विश्वविद्यालय की एम.ए. हिन्दी की कक्षा के लिए)
60. आलोचना
(पंजाब विश्वविद्यालय की एम.ए. हिन्दी की कक्षा के लिए)